ब्रह्म ज्ञान

तटवर्ती वीर राघव राव

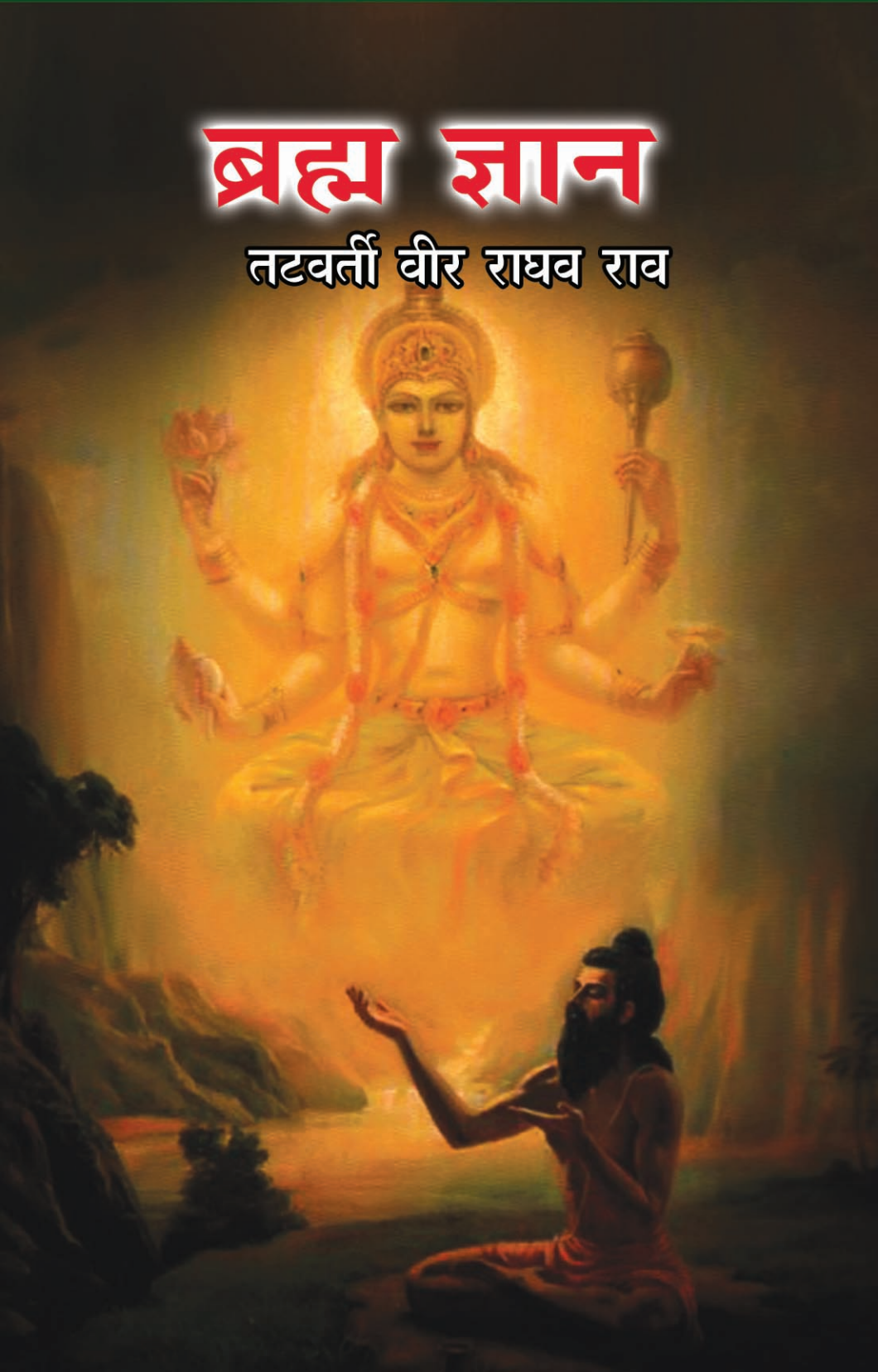

ब्रह्म ज्ञान

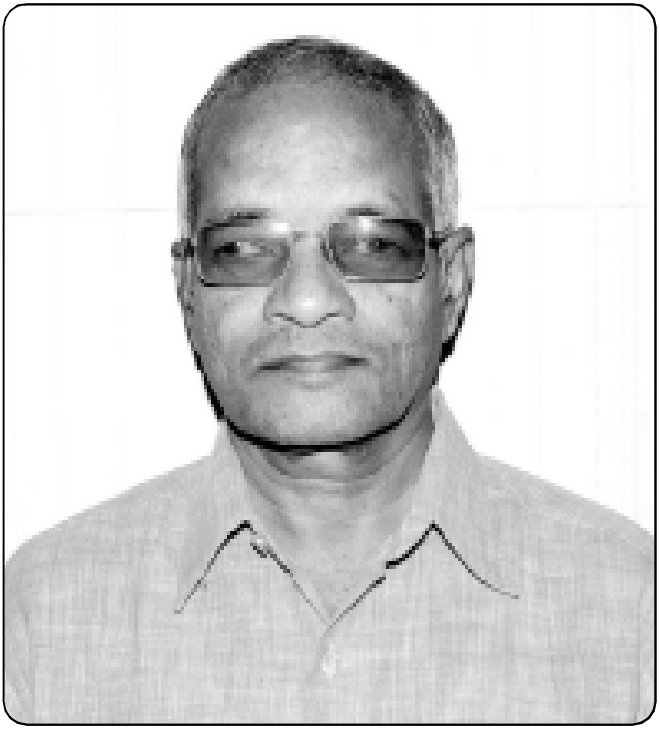

तटवर्ती वीर राघव राव

भीमावरम - 534201.

Ph: 9440309812

email : balajipyramid.bvrm@gmail.com

Rs.100/-

ब्रह्म ज्ञान

बहुत से लोग हैं जो ब्रह्म के इस ज्ञान को सीखने में रुचि रखते हैं। ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। कई लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने कई गाने गाए हैं।

ऐसे लोग हैं जो ब्रह्म के ज्ञान की तलाश में हिमालय गए हैं, उन शिक्षकों को खोजने के लिए जो इसे सिखा सकते हैं। वे हैं जो जंगलों, एकांत स्थानों, आश्रमों और गुरुकुलों में जाते हैं। ऐसे लोग हैं जो आध्यात्मिक गुरुओं, धर्माध्यक्षों, योगियों और बड़ों की ओर मुड़ते हैं।

बहुत से लोग ब्रह्म के इस ज्ञान के लिए घर, धन, सब कुछ त्याग देते हैं। सुख, भोग, सब कुछ त्याग कर उन गुरुओं का सहारा, उनके माध्यम से वे ब्रह्म के इस ज्ञान को प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं। उन शिक्षकों को कई वर्षों की सेवा के बाद, वे अपने परीक्षणों और क्लेशों से बचे रहे। ब्रह्म के इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए धीरज और लालसा आवश्यक हैं।

कुछ गुरु उनका पूरी तरह से अपनी सेवा के लिए उपयोग करते हैं। इस प्रकार उन्होंने न केवल जीवन भर बिना वेतन के सेवा की, बल्कि आश्रम का सारा काम भी किया। और फिर भी कुछ गुरु इस ज्ञान को नहीं जानते! वे उन शिष्यों को जानने का ढोंग करके और जो वे जानते हैं उसे थोड़ा-बहुत बताकर अच्छा उपयोग करते थे। भले ही कुछ गुरु ब्रह्म को नहीं जानते हों, आप आने वाले शिष्य के सामने योग्य हैं।

ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति को अर्जित करना होता है, और जो योग्य नहीं हैं उन्हें ब्रह्म का ज्ञान नहीं होगा। साथ ही, कुछ गुरुओं ने सभी को तुरंत ब्रह्मज्ञान नहीं सिखाया, भले ही वे ब्रह्मज्ञान को जानते थे, वे उन्हें कई वर्षों तक

कई अन्य बातें बताते थे और उन्हें साधना का अभ्यास कराते थे।

तो उन पर कई लोग खड़े नहीं हो सके और चले गए। अगर कुछ लोग खड़े हैं अगर उन्हें बताया भी जाए कि ब्रह्म ज्ञान क्या है, तो भी वे सही अभ्यास नहीं बता पाए। साथ ही कुछ गुरु विभिन्न प्रकार के ब्राह्मण ज्ञान की शिक्षा देते थे। वही ब्रह्म का ज्ञान है। समाज में इतने सारे लोग ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

इन स्तरों पर विभिन्न कठिनाइयाँ हैं। तो ब्रह्म के ज्ञान के बारे में आइए जानने की कोशिश करते हैं।

'ब्रह्म ज्ञान' ब्रह्म के बारे में जानना है। जितना अधिक आप जानते हैं, उतना अधिक ज्ञान आपको मिलता है। साथ ही इस ब्रह्म को पाने का मार्ग 'ब्रह्मविद्या'' कहलाता है। साथ ही यदि कोई इन दोनों के बारे में बताता या निर्देश देता है, तो उसे 'ब्रह्मोपदेशम' कहा जाता है।

तो आइए पहले जानते हैं 'ब्रह्मा' के बारे में। इसके बाद 'ब्रह्मा' प्राप्त शिक्षा पता करते हैं। 'ब्रह्मा' का अर्थ है महान। यानी सब से ऊपर! इसका अर्थ है सब से श्रेष्ठ। इसका मतलब है कि अब और नहीं है। इसका अर्थ है कि 'ब्रह्मा' इतना महान है।

'ब्रह्मा' नाम निराकार है। अर्थात उसका कोई नाम नहीं है, कोई रूप नहीं है। वह निष्क्रिय है। इसके अलावा, वह सजातीय, विषम, स्व-विभेदित है। यहाँ एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से सम्बन्ध समरूप है। उनके बीच का अंतर सजातीय अंतर है। इसी तरह, मनुष्य और मवेशियों के बीच का संबंध विषम है। मनुष्य और मवेशियों के बीच के अंतर को विषमता कहा जाता है। एक ही शरीर में एक अंग का दूसरे अंग से अलग होना स्वागत भेदम कहलाता है।

इसके अलावा, ब्रह्म सर्वव्यापी है। उत्तम वह उसके बारे में ऐसा नहीं

कह सकता। उसे परदु, परतत्त्व, परब्रह्म, सिद्धि, चित्तु, सत्तु, ब्रह्म आदि नाम महात्माओं ने उनके बारे में सिखाने के लिए दिए हैं, लेकिन उनका उनसे कोई लेना-देना नहीं है।

क्योंकि इस अनंत ब्रह्मांड में अनंत संसार हैं। इन संसार में सभी जीवित प्राणियों को उनके द्वारा और उन्हीं से बनाया गया है। इसलिए वह सब से श्रेष्ठ है। इसके अलावा, वह शाश्वत है, जिसका अर्थ है शाश्वत, जो हमेशा मौजूद है, जिसका अर्थ है कि वह नहीं बदलता है, भले ही समय बदल जाए या युग बदल जाए। वे ही इस सृष्टि में ऐसे गुणों वाले हैं।

दूसरे शब्दों में, वह 'सत्य' है क्योंकि उसमें ये सभी गुण हैं। उसके सिवा और कुछ 'सत्य' नहीं है। कारण 'ब्रह्म' के अतिरिक्त और कुछ भी शाश्वत नहीं है। क्योंकि इस संसार में आप जो भी देखते या लेते हैं, उससे पता चलता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है। यानी सब कुछ बदल जाएगा! बदलने योग्य! कारण यह है कि इस सृष्टि में सब कुछ रचा हुआ है। इसके अलावा, जो कुछ भी बनाया जाता है वह कुछ समय के लिए ही मौजूद होता है। यह ऐसा है। थोड़ी देर बाद गायब हो जाता है। इसलिए ब्रह्म के अलावा सब कुछ 'झूठ!'है।

इस रचना में से कोई भी लो! अंत में सबसे पहले 84 लाख जीव-जीवरस, चरस-आचार सभी बनाए जा रहे हैं। वे समय के साथ बदलते हैं और अंत में गायब हो जाते हैं। आखिरकार, यह पृथ्वी, चंद्रमा या सूर्य नहीं है। अरबों ग्रहों और संपूर्ण ब्रह्मांड को किसी न किसी बिंदु पर गायब हो जाना चाहिए, यहां तक कि कुछ अरब वर्षों में भी। उसे सृष्टि का अंत कहा जाता है। लेकिन ब्रह्मा के पास ये परिवर्तन और अंत नहीं हैं। वह अपरिवर्तनशील है। समय बदल सकता है, युग बदल सकते हैं लेकिन 'ब्रह्म' नहीं बदलता। क्योंकि उसका कोई जन्म नहीं है। कोई मृत्यु नहीं है। वह मृत्यु और जन्म से रहित है। वह आदि और अनंत है। अर्थात उनका न जन्म है, न वृद्धि है और न अंत। कारण यह है कि वह आदि में है। इसका अर्थ है कि वह सृष्टि से पहले है और वह बीच में है। जब सृष्टि का क्रम हो रहा होता है तब वह उपस्थित होता है। भले ही सृष्टि समाप्त हो जाए।

कारण यह है कि यह सृष्टि उन्हीं से उत्पन्न हुई है। और अंत में उसी में विलीन हो जाएगी। इसलिए यह कहा जाना चाहिए कि उसके अलावा कोई नहीं है। इस 'ब्रह्मा' को 'आत्मा' भी कहा जाता है। अथर्ववेद में भी इसका उल्लेख है।

'अयमात्मा ब्रह्म'।

अर्थात यह 'आत्मा' जो कुछ भी है वह ब्रह्म है। इस 'ब्रह्मा' को 'परब्रह्म' भी कहा जाता है। कारण परम् का अर्थ है अदृश्य। 'ब्रह्मा' का अर्थ है महान और 'परब्रह्म' का अर्थ है 'अदृश्य महान' है।

भगवद गीता में भगवान कृष्ण भी यही कहते हैं..

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च।। (भ.गी.10-20)

अर्थात् मैं आत्मा हूँ, मैं सभी भूतों अर्थात् समस्त जीवों में विद्यमान हूँ। मैं आदि हूं अर्थात इस सृष्टि से पहले हूं। मैं सृष्टि के बीच में हूं। साथ ही, अंत में, भले ही यह सृष्टि समाप्त हो जाए, मैं वहां रहूंगा।

इसके अलावा, भगवद गीता में 'परब्रह्म' के बारे में यही कहा गया है।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।। (भ.गी.13-14)

सर्वथा प्रतिमा समस्त मानवता की महिमा है।

उस ब्रह्म का अर्थ है कि आत्मा के हाथ पैर हैं। आंखें, सिर और चेहरे हैं। इसके कान हैं और यह सभी लोकों को ढँक लेता है।

इसका अर्थ यह है कि यह जान लेना चाहिए कि परब्रह्म में समस्त ब्रह्मांडों को जानने की शक्ति है। यानी वह सब कुछ देख रहा है। वह सभी जीवों के कार्यों को देखता है। वह विचारों और शब्दों को सुनता है। एक अर्थ में, हमें यह जानना चाहिए कि इस सृष्टि में ऐसा कुछ नहीं है जो ब्रह्म से छुपा हुआ है।

ब्रह्म के बारे में भगवत गीता में इस तरह से बताया गया है।

श्लोकः **सर्वेंद्रीयुनाभासं सर्वेंद्रियविवर्जित्म ।**
आसक्तं सर्वभृच्चः निरगुन गुणभोर्क्ता च ।। (भ.गी.13-15)

श्लोकः बहिरन्तश्च भूताना मचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वा तदविग्नेयम दूरस्थं शांतिके च तत् ।। (भ.गी.13-16)

श्लोकः अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।। (भ.गी.13-17)

श्लोक : ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।। **(भ.गी.13-18)**

वह ब्रह्म समस्त इन्द्रियों को प्रकाशित करते हुए भी कुछ नहीं कहता, गुणों से रहित है। जो बाहर है, जो भीतर है, जो अचल है, जो गतिमान है। इतना सूक्ष्म होने के कारण यह अज्ञानी के लिए ज्ञात होने से बहुत दूर है। यह ज्ञानियों के भी करीब है।

ब्रह्म सभी प्राणियों में अविभाजित और विभाजित दोनों है। यह ज्ञात होना चाहिए कि यह जीवों का निर्माण और पालन-पोषण करता है। और ब्रह्मा सूर्य, चंद्र और अग्नि जैसे तत्वों को प्राण देते हैं। अज्ञान से भिन्न ज्ञान का स्वरूप है। ज्ञान सद्गुणों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है और कहा जाता है कि यह सभी प्राणियों के हृदय में निहित है।

इसके अनुसार आदिम अंत अर्थात जन्म और मृत्यु सभी के लिए और सब कुछ हैं लेकिन 'ब्रह्मा' के लिए नहीं। इसलिए वह इतना महान है। इसलिए उन्हें 'ब्रह्मा' कहा जाता है। इसके अलावा, वह 'सत्य' है। उसके सिवा कुछ भी 'सत्य' नहीं है। कारण यह है कि इस सृष्टि में जो कुछ भी रचा गया है। वह बदल रहा हैं अंत आ रहा है! इसलिए 'ब्रह्मा' सबसे बड़ा है। इसलिए वेद भी 'सत्य' की शरण लेने को कहते हैं। इस प्रार्थना के माध्यम से सत्य की शरण लेने का फल भी बताया जाता है।

"असतो मा सद्गमय ।"

"तमसो मा ज्योतिर्गमय ।"

"मृत्योर्मा अमृतं गमय ।"

"ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।"

"असतो मा सद्गमय!" का अर्थ है "मुझे असत्य से सत्य की ओर ले

जाना।" भगवान का अर्थ है 'ब्रह्मा' की प्रार्थना करना।

क्योंकि अब सभी 'झूठ' में जी रहे हैं। इसलिए उन्होंने कहा 'सत्यमेव जयते'। यानी 'सत्य' की जीत होगी।

लेकिन मेरे लिए जीवन अच्छा है। सबकुछ ठीक है। पैसा अच्छा है, कोई बड़ी समस्या नहीं है। मुझे हर तरह से फायदा हो रहा है। क्या यह सब जय नहीं है? यदि मैं सत्य में हूँ तो क्या होगा यदि यह झूठा है तो? ऐसा सोचा जा सकता है।

लेकिन जीवन में किसी का सिर्फ यही एक जन्म नहीं होता, हर किसी के कई जन्म होते हैं। प्रत्येक जन्म में पिछले कर्मों के आधार पर जीवन अच्छा हो सकता है। लेकिन दूसरा जन्म बहुत दुखदायी होता है। जो 'झूठ' में रहते हैं, वे 'सत्य' को जाने बिना अनेक गलतियाँ और पाप करते हैं। फलस्वरूप प्रत्येक जन्म में बहुत कष्ट भोगने पड़ते हैं। फिर यह जीवन क्यों? ऐसा लगता है कैसे इस जीवन से बाहर निकलें? ऐसा लगता है मुझे इस तरह का जीवन नहीं चाहिए।

ऐसे पुनर्जन्म को 'पित्र यान' कहा जाता है। असत्य में जीवन बिताने वालों को "पित्र यान" करना ही पड़ता है। सारा "पित्र यान" असफलता है।

यह सब सत्य को न जानने और सत्य का सहारा न लेने का कारण हुआ। क्या ऐसी समस्याओं, पीड़ाओं, कष्टों और दुखों के साथ जीवन असफल नहीं है? और ऐसी असफलता से बाहर निकलने के लिए 'सत्य' की शरण लेनी पड़ती है। 'सत्य' में रहना पड़ता है। इसलिए 'असतोमा सद्गमय' प्रार्थना करने का कारण है।

तो सत्य क्या है? झूठ क्या है? चलो पता करते हैं।

'ब्रह्मा' के द्वारा निर्मित किया गया सब कुछ 'असत्य' है क्योंकि इस सृष्टि में कुछ भी शाश्वत नहीं है। वह स्थायी नहीं है। जो कुछ भी लिया जाता है और जो भी दिया जाता है वह अनित्य है। सभी अस्थाई हैं। किसी बिंदु पर हर किसी को और सब कुछ गायब हो जाना है! सब कुछ ऐसे ही गायब हो जाता है।

इसके अलावा 'असत्य' हमेशा बदलता रहता है। यह नहीं बदलेगा। इसलिए इस सृष्टि में जो कुछ भी लिया जाता है, वह बदलता रहता है। इसलिए सब झूठ है! देखो दिन बदलते हैं, सप्ताह बदलते हैं। साल बदलते हैं, आखिर में युग भी बदलते हैं। 84 लाख जीव-जंतु भी बदल रहे हैं। इसलिए, भले ही समय बदल जाए, भले ही युग बदल जाए, जो कुछ भी बदलता है वह सब झूठ है।

शाश्वत क्या है? अपरिवर्तनीय क्या है? समय बदल जाए और युग बदल जाए तो भी क्या नहीं बदलेगा? वह 'ब्रह्मा' ही एक ऐसा है जो इस तरह नहीं बदलता! इसलिए कहा जाता है कि 'ब्रह्म' सत्य है, बड़ों को 'झूठ' की नहीं 'सत्य' की तलाश करनी चाहिए। सच्चाई के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

लेकिन सत्य के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण कई लोग असत्य में अपना जीवन बिता रहे हैं। वे झूठ का सहारा लेते हैं। वे झूठ बोल रहे हैं। आइए उपरोक्त के बारे में थोड़ा और जानें। हम जानते हैं कि ब्रह्म 'सत्य' है। अर्थात जिस लोक में 'आत्मा' सत्य है।

सब कुछ इस भाव से जी रहे है कि शरीर मैं हूं। शरीर को महत्व दिया जाता है। लंबे समय से वे शरीर के सुख, शरीर की सुंदरता, शरीर के सामंजस्य,

शरीर के स्वास्थ्य, शरीर की तलाश कर रहे हैं। शरीर लाभ के लिए धन कमाने को अधिक महत्व दिया जा रहा है। शरीर को एक नाम देकर, नाम को एक नाम मिलना चाहिए, वह नाम प्रसिद्ध होना चाहिए, और वे यश के लिए मर रहे हैं। आशा कर रहे हैं। जरा सा भी मिल जाए तो गुस्सा आ रहा है। वे कब से देह से जुड़ी वस्तुओं के लिए जी रहे हैं।

लेकिन 'आत्मन यानी सत्य' यानी 'ब्रह्म' को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया है। साथ ही, वे शरीर की शरण लेते हैं और 'आत्मा' की पूरी तरह उपेक्षा करते हैं।

देखें 'आत्मा' का अर्थ है 'ब्रह्म' जिसका अर्थ है 'भगवान' और बाकी सब कुछ झूठ! लेकिन लोग हमेशा असत्य बोल रहे हैं। सत्य नहीं कह रहे हैं। चलिए असत्य बातों के कुछ उदाहरण देखते हैं:- एक व्यक्ति मंदिर जाकर आया है।

1. नहीं गया कहना 'झूट' है।

2. मंदिर जाकर आया हूं कहना 'असत्य' है।

चलिए जानते हैं देवालय क्या है? आलय का अर्थ रहने की जगह है। 'हिम' का अर्थ बर्फ है। इसलिए बर्फ की जगह को हिमालय कहते हैं।

साथ ही जिस स्थान पर भगवान होते हैं उसे 'मंदिर' कहा जाता है। किन्तु वे उस स्थान पर गए जहाँ मूर्ति थी। इसलिए यह केवल एक मंदिर है। और वह 'मंदिर' क्या है जहां सच्चा भगवान है? वह मानव शरीर है। मानव शरीर ही वास्तविक 'मंदिर' है। कारण ईश्वर है अर्थात शरीर ही वह स्थान है जहाँ 'आत्मा' निवास करती है।

इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा है "देहो देवालयों प्रोक्तः,जीवो देवो सनातनः" यानी देह देवालय है, देह में मौजूद जीव यानी आत्मा सनातन देव है। लेकिन यहां पर वह व्यक्ति विग्रह आलय गया। देवालय नहीं। यानी उसने भगवान के विषय में असत्य कहा है, सत्य नहीं।

यदि आप जहां जाते हैं वहां ध्यान करते हैं, तो आप कह सकते हैं कि आप मंदिर गए हैं। तभी 'सच' कहा जाता है। यदि आप ध्यान नहीं करते हैं, तो इसका मतलब है कि आप शरीर में प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिए यह 'झूठ' कहने जैसा है।

इसी प्रकार कहते हैं "भगवान का प्रसाद लीजिए"। यह भी 'असत्य' कहने जैसा है। प्रसाद का मतलब प्रदान की गई या निवेदन की गई चीज है। यह हम प्रसाद पुजारी ने दिया है भगवान ने नहीं है ना? इतना ही नहीं यहां विग्रह के आगे निवेदन किया गया है लेकिन भगवान के आगे नहीं।

यह भी कहा जाता है कि भगवान का अभिषेक किया गया है। वह भी 'झूठा' है क्योंकि उन्होंने भगवान का नहीं बल्कि किसी मूर्ति का अभिषेक किया था।

यह भी कहा जाता है कि उन्होंने भगवान से प्रार्थना की। यह भी असत्य है। कारण यह है कि भगवान की पूजा नहीं की जाती है, बल्कि भगवान द्वारा मूर्ति की पूजा की जाती है। क्योंकि भगवान शरीर में है, मूर्ति हड्डियों में है।

कई मामलों में, वे भगवान के बारे में 'सच' के बजाय झूठ बोलते हैं। कारण यह है कि 'असत्य' का अर्थ है उचित समझ का अभाव।

लेकिन वेदों में इसे 'सत्यंवाद, धर्मांचरा' कहा गया है। इसका अर्थ है 'सत्य को पढ़ना चाहिए' और 'धर्म का अभ्यास करना चाहिए'। इसलिए सच बोलना चाहिए और सच का सहारा लेना चाहिए। कारण: 'सत्य' का सहारा लेने वालों को जीवन में सफलता अवश्य मिलती है। इसलिए उन्होंने कहा 'सत्यमेव जयते'।

और कैसी सफलता? इसका अर्थ है कि जो 'सत्य' अर्थात् 'ब्रह्म' की शरण लेते हैं उन्हें सृष्टि का अनंत ज्ञान प्राप्त होता है। जो नहीं है वह ऐसा है और जो नहीं है वह ऐसा नहीं है। जानिए 'जो जैसा है वैसा है'। वे वही करते हैं जो उन्हें करना चाहिए, वे वह नहीं करते जो उन्हें नहीं करना चाहिए, वे सृष्टि के अनुसार कार्य करते हैं, वे सभी कर्मों से मुक्त हो जाते हैं, और वे जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। जीवन की मंजिल को प्राप्त कर लेते हैं। अंत में पृथ्वी पर प्राप्त होने वाले 'निर्वाण' को प्राप्त कर लेते हैं। अनंत सुख प्राप्त कर लेते हैं।

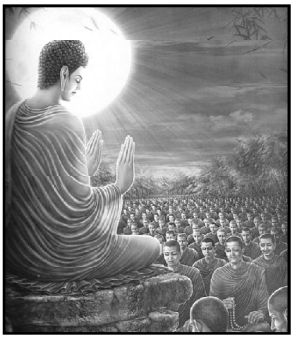

सोचिए इससे ज्यादा सफलता क्या है? इसलिए उन्होंने कहा 'सत्यमेव जयते'। इसलिए बुद्ध ने 'सत्य' का अनुभव किया और श्वास पर ध्यान लगाकर 'निर्वाण' प्राप्त किया। वे दुःख से हमेशा के लिए छुटकारा पाने का तरीका जानते थे। इसलिए उन्होंने हमें 'सत्य' की शरण लेने को कहा। अर्थात 'ब्रह्म'... श्वास पर। सबको सिखाया गया कि ध्यान ही मार्ग है। असत्य से सत्य में प्रवेश करना, अंधेरे से उजाले में प्रवेश करने जैसा है।

प्रकाश में प्रवेश करने से! अर्थात वे अज्ञान को दूर कर ज्ञानी बनेंगे।

इसलिए उन्होंने 'तमसोमा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना करने को कहा। वह है अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने के लिए प्रार्थना करना।

जो इतने ज्ञानी हैं वे अंततः यह अनुभव करेंगे कि 'मृत्यु का जन्म मृत्यु है। इस स्थिति को प्राप्त करें। अर्थात उन्हें 'अमृत' प्राप्त होगा। इसलिए उन्होंने 'मृत्युर्मा अमृतंगमय' की प्रार्थना करने को कहा। इसे अमृत कहते हैं। इसे ही बुद्ध ने 'निर्वाण' कहा है।

किसी भी मनुष्य को अंततः यही हासिल करना चाहिए। मानो मनुष्य ने 'निर्वाण' प्राप्त कर लिया हो। ऐसी सफलता पाने के लिए 'सत्य' का सहारा लेना पड़ता है। इसका अर्थ है 'ब्रह्म' की शरण लेना। ब्रह्म की शरण लेनी चाहिए अर्थात् 'ब्रह्म' अर्थात् 'ब्रह्मविद्या' को प्राप्त करने की विद्या जाननी चाहिए।

लेकिन दुनिया में सभी की पूजा होती है। सभी पूजे जाते हैं। लेकिन 'सत्य' यानी 'परब्रह्म' की पूजा नहीं होती। पत्थरों को पूजते देखा है। पत्थरों से बनी मूर्तियों की पूजा की जाती है। पेड़-पौधों की पूजा करना। पशु-पक्षियों की पूजा की जाती है। ग्राम देवताओं की पूजा की जाती है। वे प्रकृति के देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। गुरुओं, स्वामीजी और बाबाओं की पूजा की जाती है। देवताओं की पूजा करना लेकिन 'ब्रह्मा' की पूजा नहीं करना। कारण है 'ब्रह्म' का अज्ञान, 'ब्रह्म' की महानता का अज्ञान।

एक तरह से दुनिया में हर कोई जानता है कि ईश्वर सबसे महान है। इसके अलावा, यह ज्ञात है कि सभी देवताओं में 'ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर' सबसे महान हैं लेकिन सबसे महान 'ब्रह्मा' हैं। इसलिए जान लेना चाहिए कि 'ब्रह्म' से परे कोई नहीं है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर से अलग है, यह 'परब्रह्म' अलग है। चार मुख वाला ब्रह्मा तीन रूपों में से एक है, लेकिन यह 'परब्रह्म' देवाधिदेव है, जिसका अर्थ है देवों का देव। तो जानो कि 'देवता' अलग हैं, 'ब्रह्मा' अलग हैं। इतना ही नहीं 'ब्रह्मा' और 'देवताओं' के बीच कई अंतर हैं।

1) 'ब्रह्म' का कोई रूप नहीं है लेकिन 'देवताओं' के रूप हैं।

2) 'ब्रह्म' का कोई नाम नहीं है लेकिन 'देवताओं' के विभिन्न नाम हैं।

3) 'ब्रह्म' एक है। कोई पत्नियां नहीं। लेकिन 'देवताओं' की पत्नियां होती हैं।

4) 'ब्रह्म' सर्वव्यापी है। लेकिन 'देवताओं' का स्थान है। (विष्णु वैकुंठ में हैं, शिव कैलाश में हैं, ब्रह्मा ब्रह्मलोक में हैं, और सत्यलोक के प्रत्येक भाग में बाकी देवता भी हैं।)

5) ब्रह्म के पास अनंत असीमित शक्ति है। लेकिन देवता सीमित शक्ति है।

जैसेः- पूर्वकाल में जब ऋषियों और दैत्यों ने घोर तपस्या की, जब देवता प्रकट हुए तो दैत्य अमरता का वरदान चाहते थे। लेकिन तभी देवताओं ने कहा कि यह मेरे हाथ में नहीं है, मैं तुम्हें कुछ और दूंगा। इसके अनुसार देवताओं की शक्ति सीमित है।

6) ब्रह्म का कोई जन्म नहीं है, कोई मृत्यु नहीं है, लेकिन सभी देवता माताओं से पैदा हुए हैं।

7) ब्रह्म मूल चेतना है... लेकिन देवता मूल चेतना से ही निकले हुए हैं। लेकिन ज्ञान और पूर्ण ज्ञान के साथ बड़ा हुआ वे पूर्ण आत्मा बन गए। 'ईशावास्य उपनिषद' में इस श्लोक के माध्यम से यही विषय है।

यह कहा जाता है।

श्लोकः **ओम पूर्णमदह पूर्णमिदम पूर्णत पूर्णमुद्चते।**

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते।।

तात्पर्यः- आदिपूर्णम् का अर्थ है 'ब्रह्म' पूर्ण। यह पूर्णम है जिसका अर्थ है 'ब्रह्म'।

उससे बिछड़े हुए जीव में प्रवेश करने वाला 'जीवत्य' भी पूर्ण है। उस पूर्ण वस्तु अर्थात् 'ब्रह्म' से यह पूर्ण वस्तु अर्थात् 'जीव' विद्या (ज्ञान) के माध्यम से पूर्णता को प्राप्त करता है, पूर्ण परमात्मा के रूप में रहता है।

ऐसे 'ब्रह्म' को मुसलमान 'अल्लाह' कहते हैं। ईसाईयों में 'पिता' कहा जाता है। हिन्दुओं में अनेक नामों से जाना जाता है। 'आदि शक्ति'। इसे 'पराशक्ति', 'ललिता', 'परब्रह्म', 'परमात्मा', 'विश्वात्मा' जैसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। इसलिए जानो कि देवता अलग हैं और 'ब्रह्मा' अलग हैं। 'ब्रह्मा' की महिमा को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता। अकथनीय है। दूसरे शब्दों में, मानवीय इंद्रियों में वह शक्ति नहीं है। इतना महान 'ब्रह्म' है।

भगवान पार्वती ने 'गुरु गीता' में यही सिखाया है।

'गुरु गीता!'

पार्वती देवी के संदेह और परमेश्वर के समाधान

पार्वती देवी परमेश्वर से कह रहे हैं:-

श्लोकः ओम नमोदेव! देवेश! परत्पर! जगद्गुरो।
त्वं नम स्कुर्वते भक्त्या सुरा सुर नरा स्सदा।।

श्लोकः विधिविष्णु महेन्द्रद्यै खलु सद भवान्।
नम स्करोशि कस्मैत्वम नमस्काराश्रयह किल।।

श्लोकः दृष्टया एतत कर्मा विपुलं आश्चर्यम प्रतिभातिमे।
किमे तन्न विजानेहम कृपया वद मे प्रभो!।।

तात्पर्यः- हे भगवान! भगवान! शुक्रिया! देवता, दैत्य तथा मनुष्य निरन्तर आपको भक्तिपूर्वक प्रणाम कर रहे हैं।

महेश्वर! ब्रह्मा विष्णु महेन्द्र आपकी सदा स्तुति करते हैं। आप सभी देवताओं के वंदना के पात्र हैं.. तो आप किसे प्रणाम कर रहे हैं?

आपको झुकता देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। मैं नहीं जानता कि इस अभिवादन का कारण क्या है। तो हे प्रभु! कृपया मुझे यह बताएं।

परमेश्वरः-

श्लोकः अजोह मजरम नित्यमनदिम नित्यतम गतम।

अर्जविकारम चिदानन्दम प्रन्वान्तम स्मराम्यहम।।

तात्पर्यः- देवी, मैं जन्म और मृत्यु से रहित हूं। जन्म जिसके पास कोई बंधन नहीं है वह नश्वर है। हालाँकि, मैं भी हमेशा अपने दिल में 'परब्रह्मम' की पूजा करता हूँ।

'परब्रह्म' 'कालातीत', 'शाश्वत चेतना', 'ब्रह्म' का कोई अर्थ या हानि नहीं है। वह 'अनंत', 'शाश्वत', 'आदि और अंत' से रहित है। अविकसित एक, 'परब्रह्म' का अर्थ है सार्वभौमिक चेतना, सच्चिदानंद से परे ब्रह्मानंद।

मेरे जैसे प्रतियोगी, प्रतिसाधक को अपने हृदय में चमकने वाले पुरुष, जीव, ज्योति की पूजा अंगुष्ठा मातृ की तरह आराधना करनी चाहिए। मनुष्य के रूप में जन्म लेने वाले प्रत्येक जीव को सर्वप्रथम 'परमज्योति' का दर्शन करना चाहिए।

पार्वती देवीः-

श्लोकः केन मार्गेण लो स्वमिन देहि ब्रह्ममयोभवेत्

तत् क्रुपम कुरुमे स्वमिन नयमि चरने तव।।

तात्पर्यः स्वामी! ऐसा है तो, चाहे कोई भी तपस्या कर लो ब्रह्म अनुभूति सबसे जरूरी है ना? ऐसी ब्रह्माअनुभूति को प्राप्त करने का मार्ग क्या है? उस

मार्ग को मुझे बताइए। मैं संपूर्ण रूप से आप के शरण में आना चाहती हूं। मैं आपको अपना गुरु मानती हूं। मुझ पर अनुप्रिया कीजिए महात्मा।

परमेश्वरः

श्लोकः अपूर्वनंदतं नित्यम स्वयम ज्योतिर्निवमयं।

विरजस्कं परम्शम्भुं आनन्दं परम व्ययं।।

तात्पर्यः 'परब्रह्मा' को पहचानना आसान नहीं है। सोचने जितना सुलभ नहीं है। परब्रह्मा का रूप और गुण नहीं है। केवल कुछ संकेत है। वह केवल महसूस किए जा सकते हैं। परब्रह्मा का अपूर्व आनंद देने वाला गुण है। वह आनंद व्यक्त नहीं कर सकते हैं इसलिए वह अव्यक्त आनन्द है। जो केवल योगी ग्रहण और महसूस कर सकता है। वह हमेशा नया लगता है। इसलिए वह नित्य नूतन है। वह दिव्य खुशबू से भरपूर है। वह आत्मज्योति है। जो ह्रिदय के अंदर धीरे-धीरे प्रकाशित होता है। संसार में मौजूद किसी भी सुख से ब्रह्मानंद की तुलना नहीं की जा सकती है।

श्लोकः अगोचरं,तथागम्यम नम रूपादि वर्जितम

निशब्दम तं विजा नीयात् स्वभावम ब्रह्म पर्वति ।।

तात्पर्यः पार्वती! परब्रह्मा, अगोचर है। कहीं नहीं दिखाई देता है। मनोरंजन नहीं करता है। ऊपर से अगम्य है। यानी नहीं कह सकते हैं कि केवल कोई विशिष्ट मार्ग में ही प्राप्त होगा। ब्रह्मा को प्राप्त करने के लिए, मार्ग नहीं होने वाले मार्ग में यात्रा करनी चाहिए।

ब्रह्मा का कोई रूप नहीं है। नाम नहीं है। उनका अन्वेषण करने वालों की देह स्म्रिति नहीं होनी चाहिए। उस व्यक्ति को अपने शहर, नाम और अस्तित्व को भूलना पड़ेगा। दूसरी आंख से देखना पड़ेगा। वही ज्ञान नेत्र है। परम ब्रह्म तत्व केवल ज्ञान को ही प्राप्त होगा। मानव और सभी जीव को सुख

प्रदान करने वाला 'परब्रह्मा' है। उनका आवास निशब्द और प्रशांत है।

श्लोकः यधा निजा स्वभावेन कर्पूर कुसुमादिशं
सितोश्ना दि स्वभावस्च तथा ब्रह्मस्च शश्वतं।।

मानव रूप, गुण और स्वभाव से पहचाना जा सकता है। संसार में मौजूद हर चराचर का रूप होता है। थोडो का स्वभाव प्रधान होता है, जैसे कि (कपूर का गुण गर्मी देने वाला होता है,फूलों का गुण ठंडक देने का होता है) परब्रह्मा का गुण 'आनंतत्व' है। इसलिए शाश्वत होने वाले परब्रह्मा को केवल दार्शनिक रूप से पहचाना जा सकता है। रूप, नाम और दूसरे गुणों से पहचाना नहीं जा सकता है।

श्लोकः अंकि मत्र बहुनोक्तेन शस्तकोटि शते नच
दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः करुनं विना!

लाखों शास्त्र हैं, कितने ही शास्त्र पढ़ लो, कितना भी पढ़ लो, आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। आप कितना भी खोज लें, आपको विज्ञान में मोक्ष का सही मार्ग नहीं मिलेगा। **जो व्यक्ति मन की शांति की कमी से पीड़ति है और अवसाद से पीड़ति है, उसे 'सद्गुरु' मिलने से वैज्ञानिक ज्ञान का कोई काम नहीं होगा। 'सद्गुरु' के अतिरिक्त 'ब्रह्म विद्या' सिखाने वाला कोई नहीं है। भगवान शिव की महानता 'परब्रह्म' और उन्हें प्राप्त करने का मार्ग सिखाया गया कि गुरु जो करता है उसे कोई विज्ञान नहीं कर सकता।**

परमपिता परमात्मा के उपरोक्त संदेश के अनुसार न केवल अपने आप में, बल्कि सभी देवताओं में, मनुष्यों में, सभी प्राणियों में जो एक ज्वाला की तरह चमकते हैं! ज्ञात होना चाहिए कि प्रभु निरन्तर अदृश्य और अव्यक्त 'परब्रह्म' का ध्यान कर रहे हैं।

यह जान लेना चाहिए कि परम 'परब्रह्म' को रूप, नाम और गुण से नहीं जाना जा सकता। उसे इन आँखों से नहीं देखा जा सकता। हमें पता होना चाहिए कि हम उस दर्शन को ज्ञान की आंखों से ही देख सकते हैं। इसके अलावा, भगवान परमेश्वर ने कहा कि व्यक्ति को शरीर की स्मृति को भूल जाना चाहिए और देवी पार्वती से कहा कि मैं वही कर रहा हूं और आपको भी उनका ध्यान करना चाहिए।

उसे मनुष्य के रूप में जन्म लेना अभी बाकी है जिसे अपने हृदय में चमकने वाले 'पुरुष' अर्थात 'आत्मा' की पूजा करनी चाहिए। परमेश्वर ने सिखाया कि सभी की पहली महत्वाकांक्षा 'परब्रह्म' का दर्शन होना चाहिए।

और ब्रह्म के उस बोध को पाने के लिए शरीर की स्मृति नहीं रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने शहर, नाम और अस्तित्व को भूल जाना चाहिए। और देहस्मृति का अर्थ है शरीर की इच्छा, जो मन के कारण होती है, इसलिए मन को खाली कर देना चाहिए।

वह तरीका 'सांस पर ध्यास' से 'ध्यान' है।

आइए इस उदाहरण को देखें कि 'ब्रह्मा' अनंत शक्ति का अवतार है। जब कोई मरता है यानी 'ब्रह्मा' यानी 'आत्मा' शरीर छोड़ता है तो शरीर तुरंत मर जाता है। उसके बाद शव को तुरंत घर के बाहर रख दिया जाता है।

अजीब बात यह है कि तब तक सारा काम शरीर कर चुका होता है। आँखों ने देखा, मुँह ने कहा, कानों ने सुना, हाथ-पैरों ने काम किया, लेकिन जब 'ब्रह्म' अनुपस्थित है, तो शरीर कुछ नहीं कर सकता। इसलिए इसे शव कहा जाता है।

सोचिए, उस शहर के सारे स्पेशलिस्ट डॉक्टर को बुलाकर आपको जितनी फीस चाहिए उतना देंगे, इस बिना आत्मा वाले यानी बिना ब्रह्म वाले

शरीर को पहले जैसा बना दीजिए, कहने से क्या वह ऐसा कर पाएंगे? तुरंत वह बता देंगे कि हम से नहीं हो पाएगा। छोड़िए, हैदराबाद के सारे स्पेशलिस्ट डॉक्टर को बुलाकर, लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के इक्विपमेंट्स के साथ उस शव का केवल हाथ पहले जैसा करिए कहेंगे तो क्या वह ऐसा कर पाएंगे? वह तुरंत कह देंगे कि हम से नहीं हो पाएगा। दुनिया के सारे स्पेशलिस्ट, साइंटिस्ट सभी लोग मिलकर उसके मृत शरीर की उंगली तक नहीं हिला सकते हैं। वह साफ-साफ कह देंगे कि उनको नहीं हो पाएगा।

इसी से एक 'ब्रह्मा' वह कर रहा है जो इस संसार के 700 करोड़ लोग नहीं कर सकते, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि 'ब्रह्म' की शक्ति कितनी महान है। इससे भी ज्यादा अजीब बात यह है कि जो काम 700 करोड़ लोग नहीं कर सकते, वह एक 'ब्रह्म' कर रहा है। वह इस तरह के सभी कार्य एक मानव शरीर द्वारा नहीं कर रहा है, न केवल इन सभी 700 करोड़ से अधिक मनुष्यों द्वारा, बल्कि इस सृष्टि के 84 लाख जीवों द्वारा भी किया जा रहा है। सोचिए एक-एक जीव में कितने करोड़ जीव हैं!

करोड़ों जीव-जंतुओं के अस्तित्व का कारण केवल वही 'परब्रह्म' है, अर्थात् उसकी शक्ति अनंत है, और क्या? इसलिए उन्हें 'अनंतशक्ति स्वरूपु' कहा जाता है।

'परब्रह्म' की शक्ति केवल मनुष्यों के पास ही नहीं देवताओं के पास भी है। कहना चाहिए इसे उपनिषदों की निम्नलिखित कहानी से जाना जा सकता है। 'अनोपनिषत' में 'ब्रह्म' का माहात्म्य बताती है यह कथा चलो पता करते हैं।

पूर्वकाल में दैत्यों और देवताओं में भयानक युद्ध हुआ। अंत में देवताओं ने युद्ध जीत लिया। इस प्रकार जीतकर देवतागण गर्व से फूलने लगे।

इसलिए हमें इस बात का गर्व है कि हमने राक्षसों पर विजय प्राप्त की है और स्वयं यह विजय प्राप्त की है। उन्हें लगा कि उनसे बेहतर कोई नहीं है।

उस 'परब्रह्म' ने देवताओं के उद्देश्य का अवलोकन किया। इतनी शान से वे देवताओं को सबक सिखाना चाहते थे कि अगर वे अवज्ञाकारी होंगे तो वे भ्रष्ट हो जाएंगे।

एक दिन जब इन्द्रसभा चल रही थी, तब वह 'परब्रह्म' देवताओं से थोड़ी ही दूरी पर एक अत्यंत तेजस्वी यक्ष के रूप में प्रकट हुए।

महतेज रूप वाले उस यक्ष रूप को देखकर सभी देवता चकित रह गए। कोई नहीं समझ पाया कि वह कौन है। तब उन सबने 'अग्नि' को यह पता लगाने के लिए भेजा कि वह कौन है।

तब अग्नि यक्ष के पास पहुंचे। तब यक्ष ने अग्नि से पूछा 'तुम कौन हो?'।

तब अग्नि ने जवाब दिया "मैं अग्नि देवता

हूं। दुनिया में प्रसिद्ध हूं।"

यदि आप इतने प्रसिद्ध हैं तो आपकी शक्तियाँ क्या हैं? यक्ष ने पूछा।

हे तेजस्वी! मेरा पराक्रम आपको पता नहीं है क्या?

"धरती पर मौजूद हर चीज को मैं भस्म कर सकता हूं" गर्व के साथ अग्नि ने जवाब दिया।

यह सुनकर यक्ष ने अग्नि के सामने एक घास का टुकड़ा फेका और उस घास के टुकड़े को जलाकर राख करने के लिए कहा। अग्नि देव ने अपनी सारी शक्ति इस्तेमाल करके उसे जलाने की कोशिश की लेकिन वह असफल हो गया। शर्म के मारे सर नीचे करके वहां से चला गया।

बाद में सारे देवता ने मिलकर वायु को भेजा। यक्ष के पास जाने के बाद उस ने वायु से पूछा "तुम कौन हो? तुम्हारा सामर्थ्य क्या है?" तब वायु ने गर्व से कहा कि "मैं वायु देव हूं, इस धरती पर मौजूद सारी चीजों को हवा में उड़ा सकता हूं। इस सारे ब्रह्मांड को एक क्षण में हिला कर रख सकता हूं। एक ही क्षण में धरती और आकाश को एक कर सकता हूं।"

तब यक्ष ने वायु के सामने एक तिनका रखा और कहा, 'यदि ऐसा है तो इस तिनके को फेंक दो।' वायु ने घास के तिनके को उड़ाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी लेकिन कुछ नहीं कर सका। तो वायु भी पीछे मुड़ गया।

तब सभी देवताओं ने मिलकर अपने राजा इंद्र को उस कार्य के लिए आमंत्रित किया। तब इंद्र यक्ष के पास यह देखने के लिए पहुंचे कि क्या वह ठीक है, और यक्ष गायब हो गया। तब जब इंद्र आश्चर्य से इधर-उधर देख रहे थे, तब देवी पार्वती उनके सामने प्रकट हुईं। तब इंद्र ने उसे प्रणाम किया और कहा, 'देवी! वह कौन है जिसने सभी देवताओं को भयभीत कर दिया है?' उसने पूछा।

पार्वती ने उत्तर दिया कि वह 'परब्रह्म' हैं। वह 'परब्रह्म' जो सब कुछ में निहित है, आपकी विजय का कारण है और उसी 'ब्रह्म' के कारण ही आप युद्ध में राक्षसों को पराजित करने में सक्षम हुए। इस सत्य को न जान पाने के कारण तुम इस बात का अभिमान कर रहे हो कि हमने अपने पराक्रम से दैत्यों को जीत लिया है। उस 'ब्रह्म' ने स्वयं आपके अहंकार को दूर करने के लिए आपके सामने अपनी जादुई शक्ति का प्रदर्शन किया। लेकिन उनके सहयोग के बिना आप घास का एक तिनका भी नहीं हिला सकते थे। इसलिए यदि आपमें कोई शक्ति है तो जानो कि यह वही परब्रह्म है। पार्वती ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि अभिमान मत करो, उसका त्याग करो।

तब इन्द्र को ज्ञात हुआ कि शक्ति का स्वरूप 'ब्रह्म रूप' है। इन्द्र के कारण बाकी देवताओं को भी इस सत्य का पता चल गया।

उपरोक्त कथा के अनुसार यह समझा जाता है कि देवताओं द्वारा प्रदर्शित शक्ति उनकी नहीं, अपितु उनकी समस्त शक्ति 'ब्रह्म' है। यह 'ब्रह्म' की शक्ति के कारण ही था कि वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने और राक्षसों को हराने में सक्षम थे। 'ब्रह्म' की शक्ति के बिना वे तिनके को हिला भी नहीं सकते थे। यानी इतने कमजोर हो गए हैं।

आखिर इंसानों को ही ले लीजिए, मैं ऐसा इंसान हूं कि मैं जो ठान लूं वो कर सकता हूं। कितनी मेरे पास प्रतिष्ठा है। ये पद उपलब्ध हैं। वे सभी मेरे पीछे हैं और अगर मैं उन्हें छूता हूं तो मैं उन्हें एक मिनट में जगा सकता हूं। ऐसे कई लोग हैं जो डींग मारते हैं कि मैंने वह हासिल कर लिया है, मैंने यह हासिल कर लिया है।

जरा सोचिए, अगर उस रात ऐसी शेखी बघारने वाले को दिल का दौरा पड़ा और उसकी 'आत्मा' चली गई तो क्या होगा? वह लाश बन जाता है। उसे

तुरंत घर के बाहर सुला देते हैं। फिर उससे पूछो! कहो कि तुम उसे कल जगाओगे, एक बार वह आए तो उससे मिलो। क्या इसका मतलब है कि वह उठता है? क्या यहा चलता है? क्या तुम कुछ कर सकते हो? कुछ ठीक नहीं कर सकता! अंत में, यदि वह तिनके को वहाँ रख दे, तो भी वह उसे हिला भी नहीं सकता। और कल की सारी डींगें? वह अब कुछ क्यों नहीं कर सकता?

अर्थात कल 'ब्रह्म' है जिसका अर्थ है 'आत्मा'। आज 'ब्रह्म' विदा हो गया अर्थात 'आत्मा' विदा हो गई। इसका अर्थ है कि मनुष्य की सारी ऊर्जा ब्रह्म है, लेकिन स्वयं की नहीं। क्योंकि 'ब्रह्म' का अस्तित्व है, उन्होंने 'नायक' की तरह व्यवहार किया। लेकिन जब ब्रह्म नहीं रहे तो वे 'शून्य' हो गए। तो पता करो। वीरता किसी की नहीं, 'ब्रह्म' तो 'ब्रह्म' है वरना सब 'जीरो' है।

थोड़ा गौर करें तो दुनिया में बहुत से लोग शेखी बघारते हैं। वे गर्व से फूल रहे हैं। वे शान से काम करते हैं। मैंने अपनी मेहनत से बहुत पैसा कमाया है, कुछ लोग मेरी बुद्धिमता से ये पद प्राप्त कर पा रहे हैं, कुछ लोग इतना बड़ा काम कर पा रहे हैं, और कुछ लोग कह रहे हैं कि मैं बहुत अच्छा हूं।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें गाने, सवाल पूछने, अभिनय करने और इतनी दूर आने पर गर्व है। कई ऐसे हैं जो देवताओं की तरह डींग मारते हैं। परन्तु सत्य यह है कि वे अपनी महानता के कारण 'परब्रह्म' नहीं हैं, 'परब्रह्म' के बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते। वे सभी जो सोचते हैं कि वे हीरो हैं, जीरो हो जाएंगे।

इसलिए जो है उसे देखकर बहकना नहीं, अहंकार मत करना। वस्तुतः यहाँ 'मैं' नहीं है। वह जो ब्रह्म है, 'ब्रह्म' के अलावा कुछ और सोचना है, क्या कुछ और नहीं है? वह है।

इस श्लोक के माध्यम से 'ईशावास्योपनिषत' में यही कहा गया है।

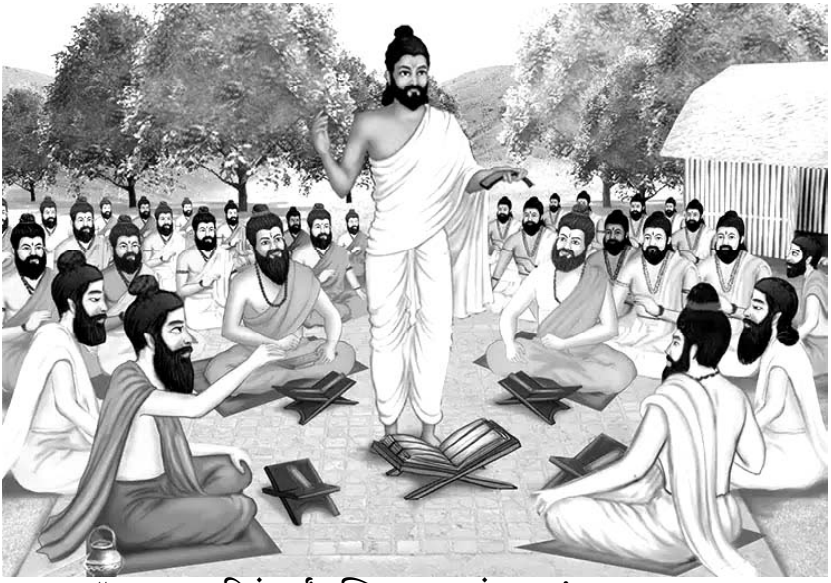

"इशा वास्यमिदं सर्वं,यत्किञ्च जग्त्यं जगत!

तेन त्यक्तेन भुञ्जिथा मौग्रुथाः कस्य स्विद्दनम"

तात्पर्यः समस्त सृष्टि में जो चराचर वस्तु है, वह सब सर्वेश्वर्य संपन्न होने वाले 'ब्रह्म' यानी भगवान द्वारा व्याप्त है। इसलिए त्याग भाव से ईश्वरमय प्रपंच का अनुभव करो। किसी दूसरे के धन कि आशा मत करो, चोरी मत करो।

इसका अर्थ है कि इस संसार की सभी गतिविधियों को ईश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। इसके अलावा, यह उपनिषद 'ब्रह्म' के रूप को जानने के लिए है, ऐसा कहा जाता है।

'ब्रह्म' का अर्थ है 'आत्मा' जो गतिहीन है लेकिन मन से तेज है। इंद्रियां इसे अनुभव नहीं कर सकतीं। क्योंकि मन कहाँ जाता है? क्योंकि 'सत्य' मन के पहले है। यह 'आत्मा' उन सभी चीजों से परे है जो विकारी चला रहे हैं। 'आत्मा' अर्थात 'ब्रह्म' अपनी उपस्थिति से करोड़ों प्राणियों की गतिविधियों को

संचालित करने के लिए जीवन शक्ति को गतिशील करता है।

'आत्मा' गतिमान है। यह अपनी वास्तविक स्थिति में नहीं चलता है। यह 'अज्ञानी' से दूर और 'ज्ञानी' के बहुत करीब है। वह अंदर और बाहर हर जगह व्याप्त है।

'ब्रह्म' का अर्थ है 'आत्मा' सर्वव्यापी, दीप्तिमान है। इसका कोई शरीर नहीं है। 'ब्रह्म' का अर्थ है सब कुछ देखने वाला, सब कुछ जानने वाला, सर्वशक्तिमान। 'स्वयंभू' का अर्थ है स्वयं निर्मित और अगर जानना हो तो कौन सा जीव सो रहा है?

पुरुष अविनाशी, शुद्ध 'ब्रह्म' के प्रति जागृत है, उस परम आत्मा में समस्त लोक आश्रित हैं। 'ब्रह्म' वह है जिसमें जम, वृद्धि, परिणीति, प्राक्षय, रोग और नाश ये छह विकार नहीं हैं। इसलिए कहा जाता है कि सब कुछ उसी का है। वह सब कुछ है। यहाँ सोचना अजीब है जब यह सब उसके बारे में है। हर कोई कुछ ऐसा पाना चाहता है जो वहां नहीं है। इसे 'माया' कहा जाता है। वह है इसका मतलब कि हर कोई भ्रम में है।

सोचने पर यह सब बहुत विचित्र लगेगा। क्या सब कुछ है? यह सब वहाँ है, है ना? क्या कुछ नहीं है? सब कुछ भ्रम के सिवा कुछ नहीं है, लेकिन जिन्होंने 'ब्रह्म ज्ञान' को प्राप्त कर लिया है, उनके लिए सब कुछ वे ही हैं। वह सब कुछ है। यह ज्ञात है कि उसके अलावा और कुछ नहीं है।

इसलिए वेदों में 'सब खलविदम ब्रह्म है!' कहा है। अर्थात सब कुछ ब्रह्म है। आइए देखें कि कैसे। हम जानते हैं कि इस सृष्टि में अरबों संसार, ब्रह्मांड और ग्रह हैं। इनमें से कुछ संसार आँखों के लिए भौतिक संसार हैं।

दृश्यमान, कुछ सूक्ष्म जगत हैं जो आँखों से अदृश्य हैं। ऐसा कहा जाता है कि आंखों से अरबों चीजें देखी जा सकती हैं। ऐसा कहा जाता है कि कई

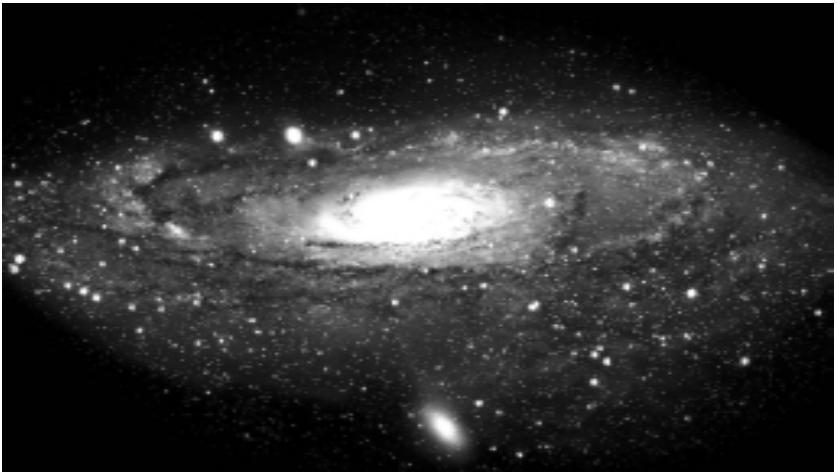

पृथ्वी क्षेत्र, सूर्य मंडल, तारे और ब्रह्मांड हैं। हाल ही में वैज्ञानिकों ने पृथ्वी जैसे सात नए ग्रहों की खोज की है। इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। हम यह नहीं सोचना चाहते हैं कि जब तक हम उन्हें खोज नहीं लेते तब तक उनका अस्तित्व नहीं है। और इन ग्रहों में अरबों जीव हैं। कहा जाता है कि 84 लाख जीव हैं। ऐसा कहा जाता है कि प्रत्येक प्रकार में कुछ करोड़ से अधिक होते हैं। हम जानते हैं कि इस समय पृथ्वी पर 700 करोड़ से अधिक मानव प्रजातियाँ हैं।

हम कल्पना नहीं कर सकते कि ऊपरी दुनिया में कितने अरब लोग हैं जो शरीर लेने के लिए तैयार हैं। यदि हम इसके बारे में सोचें, तो हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं कि कितने जीवित प्राणी हैं। और यह सब कैसे हुआ? वे कैसे बनाए जाते हैं? इसे किसने बनाया? आइए जानने की कोशिश करते हैं।

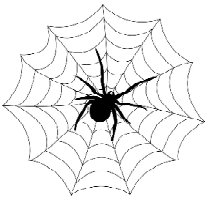

इस सृष्टि के पूर्व जो है वह 'ब्रह्म' है और यही उपनिषदों में कहा गया है। 'एकमेवद्वितीयम् ब्रह्म' का अर्थ है कि कोई दूसरा नहीं बल्कि एक 'ब्रह्म' है। उस 'ब्रह्म' को 'मूल चैतन्यम', 'विश्वात्मा', 'परमात्मा', 'आदिशक्ति',

'पराशक्ति', 'ललिता देवी' कहा जाता है। यह उनकी इच्छा से है, चाहे इसे किसी भी नाम से पुकारा जाए, कि यह सृष्टि रची गई।

मकड़ी ने कैसे बनाया खुद से घोंसला! इस प्रकार 'ब्रह्म' ने सर्वप्रथम पंचभूतों और इन सभी लोकों की रचना स्वयं से की। इसलिए यह कहा जा सकता है कि ये पंच भूत वही हैं। यदि वह न होते तो पंचभूत न होते? पंच भूत हैं 1) पृथ्वी, 2) जल, 3) अग्नि, 4) वायु, 5) आकाश। इसलिए 'अंतरिक्ष' ब्रह्म है, 'जल' ब्रह्म है, 'अग्नि' ब्रह्म है, 'वायु' ब्रह्म है। यह जानना चाहिए कि 'आकाश' भी ब्रह्म है।

इन पंचभूत से बाद में 84 लाख प्रकार के जीव प्रजातियां पैदा की गई है।

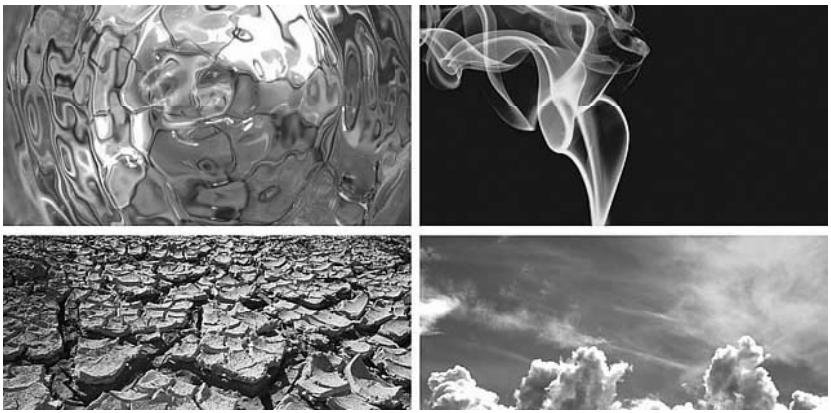

वृक्ष जाती एक भूतत्व यानी जल से निर्मित की गई है। इसी प्रकार क्रीमी कीटक, सर्प जाती द्विभूत तत्व यानी धरती और जल से निर्मित किए गए हैं। पक्षी जाती त्रिभूतत्व यानी जल, अग्नि और वायु के साथ निर्मित किए गए हैं। जंतु जाति चार भूतत्व से यानी धरती, अग्नि, जल और वायु से निर्मित किए गए हैं।

कालांतर में इन पांच तत्वों से चौरासी लाख जीवों की जातियाँ, जीव निर्मित होते हैं।

पौधों को मोनोगैमस यानी पानी से बनाया जाता है।

इसके अलावा कीड़े, सर्पजाज द्वैतवादी प्रकृति यानी पृथ्वी के साथ, जल का निर्माण हुआ।

साथ ही पक्षी प्रजाति श्रीभुत्तवम यानी जल, अग्नि और वायु के साथ है ।

पशु जाति चार भूत तत्वों अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, गैसों से बने होते हैं।

मानव जाति पंचभूत यानी भूमि, जल, अग्नि, वायु, और आकाश से निर्मित की गई है। इसलिए मानव शरीर को पंच भौतिक कहते हैं।

गौर करने पर पता लगेगा कि पंचभूत ब्रह्म से पैदा हुए हैं। यानी सारे पंचभूत ब्रह्म ही है। पंचभूत द्वारा ही सारे जीव जंतु निर्मित हुए हैं। किसी दूसरे ने उन्हें पैदा नहीं किया है। इसलिए समस्त जीव और प्रजातियों के अंदर ब्रह्म के अलावा कोई दूसरा नहीं है।

निर्मित हुए आकार और शरीर को चेतना यानी गति, विकास देने के लिए ब्रह्म यानी मूल चेतना ने अपने अंदर के अंश को अलग करके हर आकार में शरीर के अंदर प्रवेश किया है। तभी से उसने अपना जीवन शुरू किया है। ऐसे जीवन बिताने वालों को जीवी या प्राणी कहते हैं। उनके अंदर मौजूद ब्रह्म को 'जीव' कहते हैं।

इसलिए जीव यानी ब्रह्म के उपस्थित होने पर 'शिव' कहा जाता है और ब्रह्म के उपस्थित न होने पर 'शव' कहा जाता है।

इस प्रकार पंचभूत, समस्त लोक और समस्त जीव 'ब्रह्म' से निर्मित

होते हैं, और क्योंकि उनके अतिरिक्त और कोई नहीं है, इसलिए कहा जाता है कि सब कुछ उन्हीं का है। 'ब्रह्म' के अतिरिक्त अर्थात् ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं है। इसलिए 'ब्रह्म' को 'सर्वव्यापी' कहा जाता है क्योंकि कारण सर्वव्यापी है।

हर जगह ब्रह्म मौजूद होकर, सबके अंदर चेतना को पैदा किए हैं, इसलिए उन्हें सर्वांतर्यामी कहते हैं। यानी सर्व के अंदर उपस्थित होने वाला।

इसलिए प्रहलाद ने कहा,

"इन्दुगलडण्डु लेडनु,
सन्देहमु वलदु चक्रि सर्वोपगतुं!
डेण्डेन्दुवेदकि चुसिन
नन्दन्दे ग्लडु दानवाग्णी"

अर्थात हम जान सकते हैं कि प्रह्लाद ने कितनी अच्छी तरह कहा था कि 'परब्रह्म' अर्थात ईश्वर सर्वव्यापी है।

इसी प्रश्न का उत्तर लाहिड़ी महाशय ने एक अवसर पर दिया था।

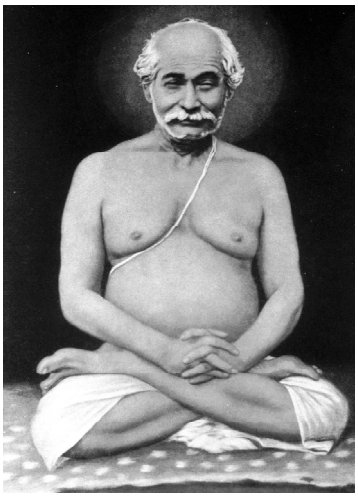

प्रश्नः शिव, विष्णु, काली आप इनमें से किस देवता का ध्यान करते हैं?

उत्तरः शिव में, विष्णु में, कलि में, मैं उसी का ध्यान करता हूँ जो आप में, मुझमें, सबमें है।

इतना ही नहीं यह “छान्दोग्योपनिषत्” में भी बताया गया है।

‘सर्वं खल्विदम ब्रह्म’ का अर्थ है सब कुछ ब्रह्म है। इसके अलावा, वह सभी जीवित प्राणियों में आत्मा के रूप में है।

भगवान कृष्ण ने भगवद गीता में कहा है कि यह न जानते हुए कि ब्रह्म, जो इतने महान हैं, हमारे शरीर के बहुत करीब और अंतरंग हैं, हम उनके लिए यहां-वहां जाते हैं... तीर्थस्थल... काशी, रामेश्वरम, जेरूसलम, मक्का, हम मदीना घूम रहे हैं।

इसलिए वीरब्रह्मेंद्र स्वामी ने ऐसा कहा। हमारे पंचों में एकमात्र ईश्वर ही सर्वश्रेष्ठ तीर्थ (ब्रह्म) है, दिव्य तीर्थ (ब्रह्मा) इस शरीर में है।

तीर्थ यात्रलन्दु देवुडोक्कडे गदा
मञ्चि तिर्थमु(ब्रह्मा)मन पञ्चे नुण्डे
दिव्य तिर्थ(ब्रह्मा)मिदिगो देहमन्दुन्नदि
कालिकांबा!हंसा!कालिकांबा!

आप किसी भी तीर्थ यात्रा पर जाएं, ईश्वर एक ही ने यह भी कहा कि पावन तीर्थ अर्थात ‘ब्रह्म’ हमारे शरीर में विद्यमान है। हमने ब्रह्म के बारे में सीखा। और ‘ब्रह्म’ को पाने का मार्ग, चलो पता करते हैं।

'ब्रह्म विद्या'

ब्रह्म को प्राप्त करने का मार्ग "ब्रह्म विद्या" है। चलिए उसके बारे में जानते हैं। जिस विद्या को जानने से विद्या को जानने वाले बन जाएंगे वहीं "ब्रह्म विद्या" है।

जिस विद्या को सीखने से मृत्यु नहीं होगी वही ब्रह्म विद्या है। इसे सबको सीखना चाहिए।

नारद ने 64 तरह की कला का अभ्यास किया है, फिर भी उनकी अशांति दूर नहीं हुई है। तब सनत कुमार के पास जाकर प्रार्थना करने पर, सनत कुमार ने "आत्मविद्या" यानी "ब्रह्म विद्या" को सिखाया था।

कठोपनिषद में यमराज ने नचिकेत को ब्रह्म विद्या को बोध कराने के लिए बहुत संशय किया था, बहुत सोचा था।

कारण यह था कि 'ब्रह्मविद्या' केवल उन्हीं को सिखाई जानी चाहिए जो

योग्य हैं, और जो योग्य नहीं हैं उन्हें पढ़ाया जाए तो यह एक शुष्क धर्मशास्त्र बन जाएगा और उसकी और समाज की बुराई का कारण बन जाएगा। इसलिए यम धर्मराज ने ब्रह्मविद्या सिखाने से पहले बहुत सोच विचार किया था। लेकिन नचिकेत ने ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए बहुत कोशिश की, जिसके कारण यम धर्मराज ने उसे ब्रह्म विद्या सिखा दी।

यम धर्मराज ने बताया "हे नचिकेत! ब्रह्म हेतु वाद को प्राप्त नहीं होगा। ब्रह्म निगूड है।" अधिकांश मनुष्य ब्रह्मतत्त्व या 'आत्मतत्व' के बारे में सुनना नहीं चाहते हैं। भले ही बहुत से लोग इसे सुनना चाहें, लेकिन इस 'ब्रह्म दर्शन' को बोलने वाला मिलना मुश्किल है। उपदेश देने वाला कोई हो भी तो उस उपदेश को समझकर उस पर मनन करने वाले और आचरण में लाने वाले बहुत कम होते हैं। इसके अलावा, यह 'ब्रह्मवाद', जो योगियों द्वारा कई तरह से सोचा जाता है, का प्रचार प्राकृत बुद्धि वाले व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है। यमधर्मराज ने कहा कि यदि ऐसे लोग उपदेश भी दें तो सुनने वाले को पता नहीं चलेगा।

उन्होंने यह भी कहा कि 'ब्रह्मा' अर्थात 'आत्मा' की दृष्टि बड़ी कठिन है, सदा ध्यान करने वाला वीर अपनी इन्द्रियों को बाह्य वस्तुओं से हटाकर मन अर्थात् मन को 'आत्मा' में रखता है वही 'उस परम आत्मा' अर्थात् 'उस परम आत्मा' को जान सकता है। 'ब्रह्म', ऐसा व्यक्ति हर्ष और शोक दोनों को जान सकता है। यमधर्मराज ने नचिकेता से कहा कि वह उसे रिहा कर देगा।

उन्होंने आगे कहा, 'सभी ऋग्वेद सिखाते हैं कि कौन सा परमपद प्राप्त करने योग्य है, जिसे प्राप्त करने के लिए कोई तपस्या करता है, जिसके लिए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है, वह परमार्थ अविनाशी 'परब्रह्म' है।

'ब्रह्म' का अर्थ सृष्टि की शुरुआत से 'आत्मा' भी है।

इंद्रियों के माध्यम से मन बाहरी वस्तुओं से परिचित हो रहा है। 'ध्यान' के माध्यम से अंतर्मुखी जाग्रत और स्वप्न अवस्था में सब कुछ साक्षी के रूप में देख सकता है। वह स्वयं को जान सकता है। यमधर्मराज ने कहा कि जिसे 'स्वार्थ' सिखाया जाता है वह सभी दुखों से मुक्त हो जाएगा और सुख का आनंद

उठाएगा।

'हे नचिकेता! यह शरीर 'परब्रह्म' के द्वार वाला शहर है, जो जन्म और मृत्यु के विकारों से मुक्त है। जो उस 'परब्रह्म' का ध्यान करता है, वह जन्म और मृत्यु के रूप संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

जैसे कोई भी 'आत्मा' इस शरीर को छोड़ देती है, यह शरीर शून्य में नष्ट हो जाता है, वह 'परब्रह्म स्वरूप' है, ये सूर्य और चंद्रमा 'परब्रह्म' को प्रकाशित नहीं कर सकते। यह कहते हुए कि यह सब सूर्य, चन्द्रमा और तारे उस 'परब्रह्म' प्रकाश से चमक रहे हैं...

हे नचिकेत! लोग अपने कर्म और ज्ञान के अनुसार मृत्यु को प्राप्त होते हैं और शरीर को प्राप्त करते हैं। सोये हुए प्राणियों में जो भी पुरुष जाग्रत है वही अविनाशी और शुद्ध 'ब्रह्म' है। यम धर्मराज यह कहना पसंद करते हैं कि सभी संसार उस परम आत्मा में आश्रय हैं! 'ब्रह्म' को प्राप्त करने का मार्ग उस्तरे की धार पर चलने जैसा है। इसलिए वे श्रेष्ठ गुरुओं से जुड़ गए और उन्हें 'ब्रह्म' के तत्वज्ञान को जानने की शिक्षा दी।

ऐसी 'ब्रह्म विद्या' यानी 'ब्रह्म ज्ञान' अब ब्रह्मर्षि होने वाले 'पत्री जी' बोध करा रहे हैं। इसलिए ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने वाली ब्रह्म विद्या के बारे में चलिए जानते हैं।

बुजुर्ग कहा करते थे कि इस 'ब्रह्म ज्ञान' को प्राप्त करने के सात चरण हैं। इन्ही को सात इन्द्रियाँ कहते हैं।

वह यह है कि

1.शुभेछा, 2.विचारण, 3.तनु मानस, 4.सत्वपत्ति, 5.असंसक्ति, 6.पदार्थ अवधारणा, 7.तुरीयं

(1) शुभेछाः-

इच्छा का अर्थ है इच्छा कि मुझे 'ब्रह्म का ज्ञान' चाहिए। साथ ही यह तीव्र इच्छा कि मुझे शाश्वत दुःख का पद प्राप्त हो अर्थात् मेरी यह तीव्र इच्छा है कि मैं दुःख से अर्थात् इन समस्याओं, कष्टों, रोगों और कष्टों से सदैव के

लिए मुक्त हो जाऊँ।

(2) विचारणः -

शुभ को स्वाभाविक रूप से इस 'ब्रह्म के ज्ञान' को कैसे प्राप्त करना चाहिए? किसके पास जाना है? उनका ख्याल है कि वे इसकी कोशिश करेंगे। गुरु मांगे जाते हैं। ऐसा करना 'विचारण' कहलाता है। तब वे गुरु उन्हें ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए (1) ध्यान, (2) स्वाध्याय, (3) सज्जन संगति के तीन आध्यात्मिक रत्नों की शिक्षा देते हैं।

(3) **तनु मानसः-**

ध्यान का मार्ग जानने के बाद, उस इच्छा से, लगातार गहन अभ्यास करना, आत्म-ज्ञान से संबंधित पुस्तकों को पढ़ना, आत्म-ज्ञान सिखाने वाले लोगों के साथ जुड़ना और बिना रुकावट के हर दिन इसका अभ्यास करना।

(4) **सत्वपत्तिः-**

ध्यान का अभ्यास करने और सात्विक भोजन करने से, एक शुद्ध सात्विक स्थिति प्राप्त करना सत्वपत्ति है, एक ऐसी अवस्था जिसमें तमोगुण और रजो गुण ध्यान के माध्यम से पूरी तरह से शून्य हो जाते हैं। तब जो कुछ बचता है वह शुद्ध सात्विक होता है। तमोगुण का अर्थ है आलस और रजोगुण का अर्थ है 'मुझे सब कुछ पता है- समझने का घमंड'। अधिकार चलाने की आदत- इन सब को छोड़ने पर ही वह स्थिति प्राप्त होती है।

ज्ञान की इस चौथी शाखा में 'ध्यान, स्वाध्याय, सज्जन सांगत्य' तीव्र स्तर पर पहुंचने के बाद प्राप्त होने वाली स्थिति ही वह है।

उस तीव्रता से, तंत्रिका तंत्र पूरी तरह से शुद्ध हो जाता है। मन पूरी तरह से नियंत्रित है। यह एक योगी होने की स्थिति है। इसके अलावा, 'अहं ब्रह्मास्मि है' सैद्धांतिक रूप से अच्छी तरह से जाना जाता है। इसे 'ब्रह्मा विद्' होने की अवस्था कह सकते हैं।

(5) असंसक्तिः-

साधना के जारी रहने से धीरे-धीरे दिव्य चक्षु उत्तेजित होगा। आप

संपूर्ण रूप से जान लेंगे कि शरीर और जीवन दोनों तात्कालिक है। तब उन दोनों से आपकी दिलचस्पी हट जाएगी।

उस अवस्था का नाम असंसक्ति (उदासीनता) है। तब वे कमल पर पानी की बूंद के समान हैं। यद्यपि वे हर चीज में उदासीन होते हैं, वे धर्मी और धार्मिक होते हैं। इसका मतलब है कि उनका अपने और हर चीज के प्रति तटस्थ दृष्टिकोण है।

उनकी दूरदर्शिता उत्तेजित होती है। वह सत्य दृष्ट बनेंगे। फिर उस पर पूरी तरह से रुचि और एकाग्रता टिक जाती है। इसे उदासीनता कहते हैं। तब उन्हें 'ब्रह्म विद्वर' कहा जाता है।

(6) पदार्थ अवधारणा :-

इस अवस्था में दिव्य चक्षु का पूर्ण उपयोग किया जा सकता है। साथ ही, प्रत्येक शब्द के अर्थ के साथ, प्रत्येक वस्तु के अर्थ में प्रत्यक्ष होना संभव है। इसका अर्थ है कि ब्रह्म विद्वर की अवस्था कहलाती है। इसे श्री सिद्ध अवस्था, सविकल्प समाधि अवस्था भी कहते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जहां करीब सारे प्रश्नों के समाधान मिल चुके होते हैं फिर भी मन के अंदर थोड़ा संशय होता है।

(7) तुरीयंः-

यह मानव के संपूर्ण विकास की स्थिति है। सिद्ध के बुद्ध होने की स्थिति है। सब लोगों को योगी, सिद्ध, बुद्ध बनाने वाले काम में मशगूल होने वाले लोगों को ही बुद्ध कहते हैं।

तुरीयं का अर्थ है सर्व सामान्य जागृत, स्वप्न, सुषुप्त स्थिति को पार करने वाला। तीनों को पार करने वाली स्थिति को तुरीयं कहते हैं। यानी निर्विकल्प समाधि की स्थिति तक पहुंचने की स्थिति है। समाधि यानी समाधान जानने की स्थिति है। 'निर्विकल्प समाधि' यानी सारे समाधान और संदेह को दूर करने के बाद मिलने वाली स्थिति है।

ऐसे लोगों को 'ब्रह्म ज्ञानी' कहते हैं। इस स्थिति तक पहुंच कर, ज्ञान प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।

बहुत साधना करनी पड़ेगी।

इसलिए कठोपनिषद में भी कहा गया है कि 'ब्रह्म' की प्राप्ति इतनी आसान नहीं है।

"येष सर्वेषु भूतेशु गूढोत्मान प्रकाशते।
दृष्यते त्वग्रया बुद्धवा सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।। (कठोपनिषद 3-12)

'यह आत्मान (ब्रह्म) जो सभी जीवित प्राणियों में अव्यक्त है, सभी के लिए प्रकट नहीं होता है; केवल सूक्ष्म ऋषि ही अपनी तीव्र और एकाग्र बुद्धि के माध्यम से इस आत्मान (ब्रह्म) को महसूस कर सकते हैं'।

- रामकृष्ण मिशन का प्रकाशन

उनके शरीर में 'ब्रह्मा' की असीम शक्ति और महिमा विद्यमान है।

साथ ही अनजाने में मनुष्य मन के अनुसार जीता है। इसलिए उसे कष्ट हो रहा है। दुःख से मुक्ति नहीं पा रहा है। ऐसी मुक्ति पाने के लिए मन को खाली करना पड़ता है। मन को खाली करने से ब्रह्म की प्राप्ति हो जाए तो मुक्ति मिल जाती है।

सभी योगियों ने इसे स्पष्ट कर दिया है। अर्थात 'ब्रह्म' की प्राप्ति के लिए बुद्धिहीन होना पड़ता है, अर्थात् मन को खाली करना पड़ता है। इसका अर्थ है आंतरिक मौन प्राप्त करना, मन को स्थिर करना। इसका अर्थ है कि मन को संयमित किया जाना चाहिए, अर्थात निर्गुण, अर्थात मन को आत्मा में लयबद्ध किया जाना चाहिए, अर्थात जो इंद्रियां मन की कैद में हैं, उन्हें मन की कैद से मुक्त करना चाहिए। अर्थात् शरीर की अनुभूति के बिना करना। तभी कोई 'ब्रह्म' को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार व्यक्ति आत्म-ज्ञान अर्थात ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। तो आप कर्म से छुटकारा पा सकते हैं। सभी योगी कहते हैं कि ऐसा करने से वे मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

उन सभी योगियों ने कहा कि जो लोग 'मुक्ति' प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें 'ब्रह्म' प्राप्त करना चाहिए। आइए आप भी जानें कि इन सभी का क्या कहना है।

श्रुति वाक्यः -

"मनयेव मनुष्याणं कारणं बन्ध मोक्षः!!"

- o - o -

मानव बंधन का अर्थ है दुःख, मोक्ष का अर्थ है सुख।

श्रुति के शब्दों से समझा जा सकता है कि मन ही कारण है। कारण मन ब्रह्म को जानने से रोकता है। इसलिए मन है तो दुःख है और मन को खाली करके ब्रह्म को प्राप्त कर लें तो श्रुति वाक्य का अर्थ मोक्ष है।

यदि आप चाहते हैं कि मन खाली हो, तो आपको 'श्वास पर ध्यान' करना होगा! यही ब्रह्मर्षि पत्री जी ने सिखाया है।

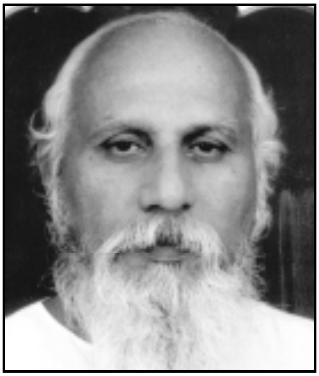

ब्रह्मर्षि पत्री जी :-

'ध्यान से ज्ञान, ज्ञान से मुक्ति'।

ध्यान 'श्वास पर ध्यान केंद्रित करना' है, विचारहीनता ब्रह्मांड की जीवन शक्ति का आह्वान करके खाली दिमाग की स्थिति प्राप्त करना है। ब्रह्मर्षि पत्री जी सिखाते हैं कि तंत्रिका तंत्र को शुद्ध करके, दिव्य नेत्र को सक्रिय करके, व्यक्ति आत्म-ज्ञान प्राप्त कर सकता है और कर्म को जला सकता है।

योगानंद परमहंसः -

'क्रिया के माध्यम से आंतरिक स्थिरता प्राप्त करने से मुक्ति मिलती है'।

क्रिया का अर्थ है श्वास क्रिया, योग का अर्थ है मिलन, श्वास से मिलन का अर्थ है 'ध्यास'।

योगानंद ने बताया कि 'ब्रह्म' का ध्यान करने से व्यक्ति मन को खाली करके और दुखों से मुक्ति प्राप्त करके आंतरिक मौन यानी बिना विचारों की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

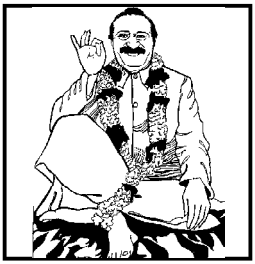

अवतार मेहर बाबाः

"The Real Things that are given & received only in Silence" ('असली चीजें जो केवल मौन में दी और प्राप्त की जाती हैं'।)

मेहर बाबा ने बताया कि इंसान को जिन वास्तविक चीजों की जरूरत है यानी शांति, खुशी, धार्मिकता, प्रेम, करुणा और ज्ञान केवल मौन में यानी गहरी शांती ब्रह्म की स्थिति में प्राप्त किया जा सकता है।

आदि शंकराचार्यः

सत्संगत्वे निस्संगत्वं
निस्संगत्वे निर्मोहत्वं
निर्मोहत्वे निश्चलचित्तं
निश्चलचित्ते जीवनमुक्ति !

यही शंकराचार्य का संदेश है कि जब शून्यता होती है तब मुक्ति प्राप्त होती है। जीवनमुक्ति का अर्थ है जीते-जी मुक्ति।

ऋषि पतंजलिः

'योगः चित्तवृत्ति निरोधः'

महर्षि पतंजलि ने कहा, 'योग भावनाओं का संयम है।' इसका अर्थ है कि योग की स्थिति प्राप्त करने के लिए मन की गतिविधियों अर्थात विचारों को रोकना होगा। इसका

अर्थ है मन को खाली करना। इसका मार्ग 'श्वास पर ध्यान' है। यही योग की अवस्था है। यदि वे ब्रह्म की स्थिति प्राप्त कर लेते हैं तो वे दुःख से मुक्त हो जाते हैं।

भगवान कृष्ण :-

1) 'योगो भवति दुखः'

वह जो योगी है अर्थात् जिसने ब्रह्म को जान लिया है उसे कोई दुःख नहीं है।

2) 'त्रेगुण्य विषय वेद निस्सैगुण्यो भवार्जुन'

श्री कृष्ण परमात्मा ने कहा - हे अर्जुना! त्रिगुण के अतीत निर्गुण बनजाओ! मन को शून्य करने से निर्गुण बन सकते हो। कोई सत्त्व, रज, और तमोगुण को पार कर सकता है। ऐसा बनने का मार्ग 'श्वास पर ध्यास' है।

श्री वीरा ब्रह्मेन्द्रस्वामीः-

स्ननमन्दु लेदु,पानमन्दु लेदु
मन्त्र तन्त्रमुलन्दु महिम लेदु
मनसु कुदिरेनेनि घनयोगि तानौनु
कालिकांबा! हंसा कालिकांबा!

नदी स्नान और समुद्र स्नान में कुछ भी नहीं है। मंदिरों में लिए गए तीर्थों और गंगा के तीर्थों को पीने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मंत्रों में भी कुछ नहीं है। कोई योगी तभी बन सकता है जब वह ध्यान में मन को निर्गुण अवस्था में ला सके। वह ब्रह्म पद को प्राप्त कर सकता है। वह दुःख से बाहर निकल सकता है। यही मुक्ति है।

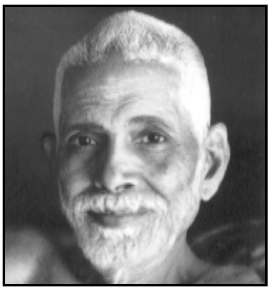

रमण महर्षि :-

'मन आत्मा में लयबद्ध होना चाहिए'

अर्थात यदि मन शून्यता की स्थिति में पहुँच जाता है, तो यह वही मुक्त अवस्था है, जो आत्मा अर्थात् ब्रह्म की अवस्था है। इसे 'श्वास पर ध्यान' द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। शोक से मुक्ति मिल सकती है।

कल्कि भगवानः-

'मुक्ति मन के बंधन से इंद्रियों की मुक्ति है।'

इंसान की इंद्रियां मन के कहे अनुसार काम करती हैं। इसलिए, वे मन की कैद में हैं। यदि इन्द्रियाँ मन के वश में हों तो मनुष्य का जीवन दयनीय हो जाता है। इसलिए उन्हें मन के बंधन से मुक्त कर देना चाहिए। मन है तो इन्द्रियाँ मन के वश में हैं। मन को खाली करने से इन्द्रियों को मुक्ति मिलती है। मनुष्य दुःखों से मुक्त हो जाता है। सांस पर ध्यान मन को खाली करने का तरीका है।

सत्य साई बाबा :-

'देह-भावना छोड़ने से ही आता है देवत्वक'

जब तक मनुष्य को शरीर का भान है तब तक सभी प्रकार के दुःख अवश्यम्भावी हैं। शरीर का कारण मन है, मन के खाली होने पर तुरंत ईश्वर यानी 'ब्रह्म' का बोध होगा। दुःख से मुक्त हो जाओगे। खुश रहोगे। इसका तरीका है 'ब्रीथ मेडिटेशन'।

जीसस :-

"For Forty days and Forty nights he ate nothing" (चालीस दिन और चालीस रात तक उसने कुछ नहीं खाया!)

'जीसस ने चालीस दिनों तक कुछ नहीं खाया', अर्थात, बिना दिमाग से खाए, बिना सोचे-समझे, अपने विचारों को संयमित कर, 40 दिनों तक आंतरिक मौन के साथ एक ध्यान मुद्रा में रहे, और देवत्व यानी ब्रह्मत्व को प्राप्त किया। उन्होंने निर्विकल्प समाधि प्राप्त की।

गौतम बुद्धः-

निर्वाण यानी सारे दुखों से हमेशा हमेशा के लिए बाहर निकलने के लिए मानव को **आनापानसति** ध्यान करने के लिए बोध करा रहे हैं। उन्होंने सिखाया कि **आनापानसती** अर्थात **श्वास पर ध्यान** द्वारा, मन की गतिविधि को रोककर, ब्रह्मांड का आह्वान करके, गैर-कर्म ... ब्रह्म की प्राप्ति से सभी दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है।

ब्रह्मर्षि पत्री जीः-

आध्यात्म विज्ञान के अनुभव के अनुसार, एक शिक्षक जो कहता है वह दूसरे शिक्षक के कहे से कभी अलग नहीं होता है। किसी भी दुनिया में, किसी भी समय, केवल एक चीज होती है जिसे 'विज्ञान' कहा जाता है। एकम सत् कहा गया है ना?

इसलिए यह जानना चाहिए कि सभी योगी दुख निवारण के लिए एक ही बात कहते हैं। उन सभी ने दिखाया है कि एकमात्र तरीका 'सत्यमार्गम' यानी

'ब्रह्म' तरीका है और यदि आप 'श्वास पर ध्यास' के साथ ध्यान करते हैं तो आप न केवल अस्थायी रूप से बल्कि स्थायी रूप से दुःख से छुटकारा पा सकते हैं।

योगियों द्वारा उपरोक्त बातों पर दृष्टि डालें तो यह मनुष्य के दुखों का कारण है। यह ज्ञात है कि यह मन में है। यदि मन में दुःख है तो मन को जीत लो।

इसे खाली करने के बाद यदि कोई आत्मा की स्थिति यानी ब्रह्म स्थिति को प्राप्त करता है, तो उसे मुक्ति का पता चल जाएगा। ऐसी विशेष साधना करके व्यक्ति 'ज्ञाननेत्रम' अर्जित कर सकता है। ब्रह्म का अनुभव किया जा सकता है। इसलिए, जैसा कि परमेश्वर द्वारा सिखाया गया है, व्यक्ति को नाम के रूपों को त्याग देना चाहिए और ब्रह्मर्षि पत्री जी द्वारा सिखाए गए 'श्वास पर ध्यान' के माध्यम से जीवन को आशीर्वाद देना चाहिए।

अब तक हमने ब्रह्म को प्राप्त करने का तरीका सीखा है। लेकिन आइए हम इस मार्ग से ब्रह्म प्राप्ति के परिणामों को भी जानें।

'ब्रह्म प्राप्ति के लाभ'

"क्षीयन्ते छाप्या कर्माणि अस्मिन दृष्टा परावरे"

तात्पर्यः ब्रह्म यानी आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने वाले उपासक या साधक के संचित, कर्मों का नाश होगा। इतना ही नहीं श्री कृष्ण भगवान ने गीता में बताया है, ध्यान द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करने का प्रयत्न करने से महान लाभ प्राप्त होते हैं।

श्लोकः निमिषम निमिषार्थं वागणाणिनो ध्यान चिंतिया!
क्रतुकोटि सहस्रणं ध्यनमेकं विषिश्टते।।

तात्पर्यः - ब्रह्मा एक मिनट, डेढ़ मिनट के लिए ध्यान में ऐसा कहा जाता है कि जो लोग इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं उन्हें हजारों करोड़ क्रतु (यज्ञ) करने का फल मिलता है। अर्थात ध्यान में मन को 'आत्मा' यानी 'ब्रह्म' पर लांघना है।

उपरोक्त वचन दिखाता है कि जो लोग इस पर ध्यान केन्द्रित करते हैं उनके लिए परिणाम कितना महान होता है।

ऊपर दिए गए इस लोक का अर्थ है कि ध्यान में मन पर काबू पाकर आत्मा यानी ब्रह्म पर ध्यान रखने वालों को बहुत महान परिणाम हासिल होता है। इसलिए समझ आता है कि ध्यान करने वाले ध्यान योगी कितने महान होते हैं। भगवद गीता में भी इसका उल्लेख है।

लेकिन कृष्ण के शब्द कितने महान हैं? जो इसका अभ्यास करता है वह कितना महान है? कितना बड़ा मुनाफा कमाया जा सकता है! आइए निम्नलिखित श्लोकों के माध्यम से चलते हैं। आइए देखें कि श्री कृष्ण ने अर्जुन को मूल गीता में क्या बनने के लिए कहा था।

श्लोकः तपस्विभ्योधिको योगी ज्ञानी भ्योपि मतोधिकः
कर्मिभ्या स्चधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन (भ.गी.6-46)

तात्पर्यः- हे अर्जुन! एक योगी तपस्या करने वालों से श्रेष्ठ है, विज्ञान के जानकारों से श्रेष्ठ है, उग्र संस्कार करने वालों से श्रेष्ठ है। इसलिए तुम योगी बनो।

उपरोक्त श्लोक द्वारा तपस्या करने वाले अर्थात् धूप में रहकर, एक पैर पर खड़े होकर, दोनों भुजाओं को ऊपर उठाकर, हठ योग द्वारा कठोर आसन करने वाले, खान-पान (उपवास) से विरत रहने वाले, जो अपने शरीर को सुखाते हैं, वे जान सकते हैं कि एक तन सुखाने वालों से बड़ा योगी है।

साथ ही यह भी जान लेना चाहिए कि योगी उनसे श्रेष्ठ है, जिन्हें विज्ञान का ज्ञान है अर्थात् पुस्तकों का ज्ञान है, विद्वत्तापूर्ण ज्ञान है अर्थात् शास्त्रों का अध्ययन करने वालों की अपेक्षा पुस्तकों को देखने वाले और वाक्पटु व्याख्यान देने वाले विद्वान हैं।

साथ ही, 'योग' करने वाला 'योगी' अनुष्ठान करने वालों की तुलना में अधिक है, अर्थात नियमित अनुष्ठान जैसे संध्या वंदनम, सूर्य नमस्कार, गायत्री मंत्र, साथ ही यज्ञ और यज्ञ अनुष्ठान। इसलिए श्री कृष्ण ने "हे अर्जुन तुम योगी बनो" कहां है। और योगी कौन है? योग क्या है?

योग शास्त्र के संस्थापक 'पतंजलि महर्षि' ने योग की परिभाषा 'योगः चित्तवृत्ति निरोधः' दी। यानी मानसिक गतिविधियों को रोकने की सलाह दी जाती है। चित्तवृत्ति का अर्थ है मन की गतिविधियाँ, चित्त का अर्थ है मन, मन की वृत्ति का अर्थ है विचार, योग मन में विचारों की समाप्ति है, योग विचारों से मुक्त होने की स्थिति है। जो उस अवस्था में है वह 'योगी' कहलाता है।

इसका अर्थ है 'आत्मा अवस्था' में होना। इस प्रकार 'योग' का अर्थ आत्मा के साथ होना है। क्या 'आत्मा' का अर्थ 'ब्रह्म' नहीं है? क्या इसका मतलब 'भगवान' है? अर्थात ईश्वर के साथ रहना ही 'योग' है। ऐसे व्यक्ति को 'योगी' कहा जाता है।

इसलिए, भगवान ने कहा कि जो योगी भगवान के साथ नासमझ

अवस्था में है, वह उन लोगों की तुलना में बहुत अधिक है, जो अपने मुंह से भगवान की प्रार्थना करते हैं, जो मन में उनके नाम का स्मरण करते हैं, जो उनके बारे में इच्छाओं के साथ प्रार्थना करते हैं। उनके बारे में बोलने वालों की तुलना में, यज्ञ अनुष्ठान करने वालों की तुलना में।

श्लोकः योन्तः सुखो न्ततराम स्थ धान्तर्ज्योतिरेव यः
सयोगि ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्म भूतोधिगच्छ्ति (भ.गी.5-24)

जो अपने भीतर आत्मा में रमता है, जो आत्मा के साथ खेलता है।

ऐसा योगी ब्रह्मस्वरूप बन जाता है और ब्रह्म साक्षात्कार प्राप्त करता है। अर्थात 'ध्यान' के द्वारा जो 'आत्मा' के साथ अ-मन की स्थिति में है, वह अंत में भगवान को प्राप्त करेगा। अर्थात इस श्लोक के माध्यम से भगवान ने कहा कि उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। अर्थात ध्यान करने वाले ही ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन आप चाहे कितनी भी साधना कर लें, आपको ईश्वर की प्राप्ति नहीं होगी। इसलिए भगवान ने कहा कि ध्यान योगी का अर्थ है कि ध्यान करने वाले सभी प्रकार की साधना करने वालों से बेहतर हैं।

क्योंकि 'ध्यान' महान है, और 'ध्यान' के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, इसलिए भगवान ने कहा कि सभी को 'ध्यान योगी' बनना चाहिए। इसके अलावा, कहीं भी पद अर्जित करने के बारे में नहीं कहा गया है। यह बात सभी को समझनी चाहिए। इसके अलावा, ध्यान अभ्यास के माध्यम से योगी बनने का प्रयास करें।

इतना ही नहीं इस प्रकार योगी बनने के लिए ध्यान साधना द्वारा प्रयत्न करके योगी नहीं बन पाने वाले लोगों ने भी बहुत फायदे प्राप्त किए हैं! इसके अलावा, यदि आप ध्यान करेंगे तो भविष्य में किस प्रकार के लाभ होंगे! भगवान ने भी कहा ध्यान में निर्विचार की स्थिति अर्थात मन को वश में करने की स्थिति, मन को खाली करने में समर्थ होने की स्थिति को प्राप्त करना बहुत कठिन होता है। अर्जुन ने प्रभु से यही पूछा ! तो मेरी क्या स्थिति है यदि मैं वह

प्राप्त नहीं कर सकता जो मैं प्राप्त करना चाहता हूं अर्थात यदि मैं 'ध्यान' शुरू नहीं कर सकता और आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता? अर्जुन को संदेह था कि क्या वह कुछ भी नहीं करने से अहंकार खो देगा और साधना को पूरा नहीं कर पाने के कारण परम, और अंत में दोनों में से सबसे खराब हो जाएगा। अर्जुन ने निम्नलिखित श्लोक के माध्यम से श्रीकृष्ण से इस बारे में पूछा।

श्लोकः कस्चिन्नो भय विभ्रश्ठा स्चिन्नाभ्रमिव नश्यि
अप्रतिष्टो महाबाह? विमूढो ब्रह्मनः पधि।।(भ.गी. 6-38)

हे कृष्ण! क्या वह मूर्ख जो ब्रह्म (योग का मार्ग) के मार्ग में अस्थिर है, इन दोनों लोकों के लिए दुष्ट होने के कारण बिखरे हुए बादल की तरह नष्ट हो जाएगा? क्या इसका मतलब यह है कि अगर आप इस दुनिया में पैसा कमाना बंद कर दें और बैठकर ध्यान करें, तो आपको इस दुनिया में मिलने वाले सुख नहीं मिलेंगे! साथ ही योगाभ्यास पूर्ण न करने के कारण परमात्म लाभ अर्थात् मोक्ष न मिलना! क्या मैं दोनों के लिए बुरा आदमी बनूंगा? अर्जुन ने अपनी शंका व्यक्त की। अर्थात जो बिना साधना पूर्ण किये योगाभ्यास के बीच में ही शरीर छोड़ देते हैं उनकी क्या दशा होती है? भगवान कृष्ण से पूछताछ की गई। उसके लिए भगवान ने कहाँ

श्लोकः प्राप्य पुन्यर्त्कृुतां लोकानुशित्वा शाश्वतिः सुमाः
सुचिनां स्रिमतां गेहे योग भ्रश्टोभिजायते (भ.गी.6-41)

तात्पर्यः ऐसा योग भ्रष्ट (मरण के बाद) पुण्य लोक प्राप्त करके, वहां अनेक सालों तक निवास करके, तदनुसार सदाचारि होने वाले श्रीमान के घर में पैदा होगा।

श्लोकः अथवा योगिना मेव कुले भवति धीमताम्

येतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदी द्रुशम (भ.गी.6-42)

तात्पर्यः अज्ञानी योगी के वंश में जन्म ले रहा है। ऐसा जन्म प्राप्त होना

महा दुर्लभ है।

यहां हमें कुछ गहराई से सोचना पड़ेगा। साधारण से ध्यान करने वालों को कोई लाभ बाहर दिखाई नहीं देता है। उनके पास ज्यादा धन नहीं होता है। इतना ही नहीं साधारण रूप से धन कम होने वाले लोग ही ध्यान करते रहते हैं। ऐसे लोगों को देखकर बाकी लोग सोचते हैं कि यह कैसे लोग हैं? बिना कुछ काम किए! बिना पैसे कमाए! हमेशा ध्यान करते बैठे रहते हैं। यह बहुत बुद्धिहीन लोग लग रहे हैं! ध्यान करने वालों को देखकर लोग ऐसा समझते हैं। कुछ लोग तो बाहर भी कह देते हैं।

लेकिन वे कितने महान हैं जो ध्यान करते हैं! वे स्वर्ग में किस महान लोक में पहुँचते हैं! और कितना ऊंचा जन्म पाते हैं! भगवान ने उपरोक्त श्लोकों के माध्यम से सूचित किया है। उनके अनुसार अगले जन्म में धनवानों के घर में और ज्ञानी योगियों के घर जन्म लेंगे और ऐसा जन्म दुर्लभ है। इसलिए उन्हें सबसे महान 'योगी' कहा जाता है। आखिर यही कारण है कि एक 'योगी' को यज्ञ और यज्ञादि कर्मकांड करने वालों से भी बड़ा कहा जाता है।

इसके अनुसार 'ध्यान' करने वाला 'योगी' कितना महान है! आप समझ सकते हैं कि वह कितने भाग्यशाली हैं। वर्तमान में साधक साधारण दिखाई दे सकते हैं। दुनिया की नजरों में साधारण हो सकता है। लेकिन भगवान ने जो कहा है उससे यह समझा जा सकता है कि वे सबसे महान हैं।

वर्तमान में कुछ अमीर हो सकते हैं। लेकिन उस पैसे को मरने के बाद अगले जन्म में नहीं ले जाया जा सकता। इसके अलावा, हम नहीं जानते कि उनका पुनर्जन्म कैसा होगा। लेकिन भगवान ने कहा कि जिन लोगों ने ध्यान किया है वे न केवल सर्वोच्च दुनिया में पवित्र दुनिया प्राप्त करेंगे, बल्कि अगले जन्म में अमीर लोगों के रूप में जन्म लेंगे, लेकिन महान योगियों के रूप में नहीं। आइए निम्नलिखित श्लोक को देखें:-

श्लोकः प्रयत्ना द्यतमानस्तु योगी संशुद्धिकल्बिशः
अनेकजन्म सन्सिद्धस्थतो याति परां गतिं (भ.गी.:6-45)

तात्पर्यः- ऐसा प्रयत्न करने वाला योगी निष्पाप हो जाता है, अनेक जन्मों के अभ्यास से योग की सिद्धि प्राप्त करता है और परमगति को प्राप्त होता है।

एक योगी जो इस तरह ध्यान करता है उसे महान जन्म मिलेगा, और अंत में मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है। इसलिए श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को "हे अर्जुन! योगी बनो" कहा है।

उसने अर्जुन को जो बताया वही उसने हम सबको बताया है। इसलिए 'योगी' बनने की कोशिश करो जैसा कि भगवान ने कहा है। 'ध्यान' करना चाहिए। यह जान लेना चाहिए कि इस संसार में 'ध्यान' करने से बढ़कर कोई दूसरा महान कार्य मनुष्य नहीं कर सकता। यही ईश्वर का संदेश है।

हमें एक बात और याद रखनी चाहिए। हम कितनी भी कोशिश कर लें, हम टाटा और अंबानी नहीं बन सकते। कारण योग्य होना चाहिए। लेकिन अगर हम ध्यान करें तो हम योगी बन सकते हैं। योगी बनने का, ध्यान करने की शक्ति का अधिकार सभी को है। इसलिए सभी ध्यान करें। भगवान के कहे अनुसार 'योगी' बनें।

इसके अलावा, उत्तर गीता में, इस श्लोक के माध्यम से बताया गया है कि पूजा, स्तोत्र और मंत्रों की तुलना में ब्रह्म की खोज करना कितना बेहतर है।

श्लोकः पूजाकोटि समं स्तोत्रं,स्तोत्र कोटि समं जपं
जपकोटि समं ध्यानं,ध्यान कोटि सम?लयः ।।

तात्पर्यः- इसका अर्थ है कि स्तुति करोड़ों पूजा के बराबर है, जप इतने करोड़ स्तोत्रों के बराबर है, ध्यान इतने करोड़ जप के बराबर है, लय इतने करोड़ ध्यान के बराबर है।

इससे हम समझ सकते हैं कि वह ध्यान कितना महान है जो सर्वोपरि परब्रह्म की शरण ले सकता है। इस तरह के ध्यान से मनो यानि मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इसका मतलब है कि दुख को पूरी तरह से दूर किया जा सकता है।

सहज रूप से दुनिया में वृक्ष, पक्षी, जंतु, मूर्ति, ग्राम देवता, प्रकृति देवता की आराधना की जाती है। लेकिन किसी को भी परब्रह्मा या परिक्रमा की शक्ति के बारे में, परब्रह्मा की आराधना करने से प्राप्त होने वाले लाभ के बारे में नहीं पता होता है।

इतना ही नहीं परब्रह्मा की आराधना यानी परब्रह्मा के साथ जुड़ने के धान मार के बारे में भी लोगों को सही जानकारी नहीं है। लेकिन भगवद गीता में ही नहीं बल्कि योगा वाशिष्टं द्वारा ब्रह्मा ऋषि वशिष्ठ ने भी इस श्लोक द्वारा देवताओं से ज्यादा ब्रह्मा की आराधना करने की महानता के बारे में बताया है।

श्लोक : तेवान्देवय जो यार्ति यक्षा यक्षा स्त्रजन्तिहा
ब्रह्मा ब्रह्मा यज? यान्तियदरुच्चम तथार्ष्येत

तात्पर्य:- जो देवताओं का ध्यान करता है वह देवताओं को प्राप्त करता है। यक्ष का ध्यान करता है वह यक्ष को प्राप्त करता है। लेकिन जो ब्रह्म का ध्यान करते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। इसलिए जो अच्छा है उसे पाने की कोशिश करो। वशिष्ठ का संदेश भी सृष्टि में सबसे ऊपर है।

महान 'परब्रह्म' वह 'आत्मा' हैं, उनका ध्यान करके ही सभी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। सारे कर्म जल जाते हैं। सारे दुख दूर हो जाते हैं। इसलिए सुख देने वाले देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए, बल्कि 'परब्रह्मण' की पूजा

करनी चाहिए, जिससे सभी लाभ प्राप्त हो सकते हैं, अर्थात् ध्यान करना चाहिए। यही वशिष्ठ का संदेश है।

इसके अलावा, परब्रह्म सभी जीवों के मित्र, योगियों के प्रिय, भक्तों के भगवान और सभी देवताओं के देवत्व हैं। वह परब्रह्म, जो सभी हृदयों का प्रतिक्रिया कारक है, मन के आवेगों और मन के निर्णयों का आधार, प्रेरणा देने वाला, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, हमेशा आपके साथ है।

भले ही शारीरिक स्थिति कमजोर हो जाए, भले ही सभी मित्र चले जाएं, भले ही सभी संबंध टूट जाएं, उस 'परमात्मा', 'ईश्वर', 'मित्र', 'परब्रह्म' को पाने की कोशिश करनी चाहिए जो आपको नहीं छोड़ेंगे।

इसके अलावा यजुर्वेद में इस प्रकार यह कहा जाता है।

श्लोकः तस्य योनिं परिश्यन्ती धीरास्थस्मिन् ह
तस्थुर भुवनानि विश्वा (यजुर्वेदः31-19)

'विद्वान उस परब्रह्मप्राप्ति के कारण हैं। ध्यान से सत्यचरण और सत्यविद्या की अनुभूति होगी और परमेश्वर की प्राप्ति होगी। उन्हीं में ज्ञानी सत्य के निश्चय के साथ मोक्ष का आनंद प्राप्त करते हैं और जन्म और मृत्यु के रूपों के आने-जाने से मुक्त हो जाते हैं और आनंद में डूब जाते हैं।

Swami Dayanand Saraswati

(स्वामी दयानंद - पंडिता गोपदेव पर आधारित)

इसलिए इस ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ध्यान को सबसे बड़ा साधन जानो और ध्यान के द्वारा ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करो और अपने जीवन को धन्य करो।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।	Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।	Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार	Rs.160/-
4) एक और जन्म ।	Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।	Rs.150/-
6) भगवान कौन हैं।	Rs.120/-
7) कर्म सिद्धांत।	Rs.120/-
8) ब्रह्म ज्ञान ।	Rs.100/-
9) यह जीवन क्यों है? ।	Rs.100/-

For Books please contact :

Tatavarthi Veera Raghavarao

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

Note from the Publisher

platform for the mind, body & soul.

Are you looking to share your stories and experiences with the world? We publish a wide range of books on self-help and spirituality.

Visit our website to explore our books

www.mbpublish.com

Also, feel free to get back to us at **contact@mbpublish.com**, with any feedback or suggestions! We would love to hear from you.

Call us on **+91 8447749297** for bulk orders, or if you'd like to publish with us.

MB Publishing House

/mbpublishinghouse

@mbpublishinghouse

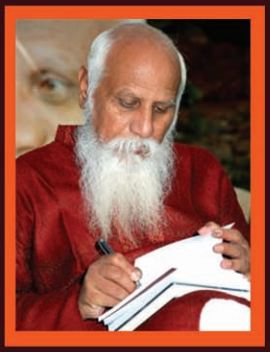

श्लोकः तस्य योनिं परिपश्यन्ती धीरास्थस्मिन् ह
तस्थुर भुवनानि विश्वा (यजुर्वेदः३१-१९)

'विद्वान उस परब्रह्मप्राप्ति के कारण हैं। ध्यान से सत्यचरण और सत्यविद्या की अनुभूति होगी और परमेश्वर की प्राप्ति होगी। उन्हीं में ज्ञानी सत्य के निश्चय के साथ मोक्ष का आनंद प्राप्त करते हैं और जन्म और मृत्यु के रूपों के आने-जाने से मुक्त हो जाते हैं और आनंद में डूब जाते हैं।

(स्वामी दयानंद - पंडिता गोपदेव पर आधारित)

इसलिए इस ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ध्यान को सबसे बड़ा साधन जानो और ध्यान के द्वारा ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करो और अपने जीवन को धन्य करो।

MB Publishing House

/mbpublishinghouse
@mbpublishinghouse

Rs.100/-